झाड़,फूँक,जादू,टोना
और
तअ़वीज़,गंडे

शरीअ़त की रोशनी में

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी
(सदर जमीअ़त पयामे अम्न, लखनऊ)

मकतबः पयामे अम्न,
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ,२० (यू०पी०) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	झाड़,फूँक,जादू,टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)
लेखक-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी-	तृतीय
पुस्तक संख्या-	2000
वर्ष-	2013
मूल्य-	40 रू०
प्रकाशक-	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड, डालीगंज लखनऊ
Book Name	**Jhaad Phook , Jadu Tona Aur Taweez Gande**
Writer	**Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi**
S. No.	**2000**
Publisher.	**Maktaba Payam-e-Amn**
	Tagore Marg, Daliganj, Lucknow, U.P. (INDIA)
Website.	**www.payam-e-amn.com**
Mobile–	**0091–9918194339, 9984490150**
E- Mail–	**maktaba.pyameamnlko@gmail.com**
	siddiquilko@yahoo.com

मिलने के पते

1. जामिया दारे अरक़म मुहम्मदपुर गौंती, फ़तेहपुर
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मोहम्मद अली रोड, भिण्डी बाज़ार, मुम्बई-400003
3. सेन्ट्रल बुक डिपो, इब्राहीमपुरा भोपाल।
4. मकतबः नदविया, नदवा (लखनऊ)
5. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
6. मकतबः हरमैन, मरकज़, लखनऊ

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
सन्देश	5
प्रस्तावना	7
झाड़फूँक	9
झाड़फूँक की जायज़ क़िस्म	9
तअ़वीज़ के जायज़ होने की शर्तें	9
झाड़फूँक की नाजायज़ क़िस्म	10
तअ़वीज़ व गंडा	10
तअ़वीज़ की क़िस्में	11
तअ़वीज़ की जायज़ क़िस्म	11
तअ़वीज़ की नाजायज़ क़िस्म	11
जादुई मन्त्र और जड़ी बूटी	11
झाड़-फूँक और गंडे	12
फूँक मारना	12
जादू क्या है	13
इस्लाम और झाड़-फूँक	14
नापसन्दीदा अ़मल	15
बिच्छू के काटने पर	15
अबुल आस सक़फ़ी का दर्द	16
झाड़-फूँक और दवाएँ लाभदायक हैं या नहीं	17
सहर (जादू) और सिफ़्ली अ़मल	20
सह़र और शिर्क	21
काहिन व नुजूमी	21
जादू, काहिन और नुजूमी का पेशा	22
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर जादू	23
लबीद बिन आ़सिम का जादू	24
छः महीने तक	25

विषय	पृष्ठ सं०
जादू का प्रभाव ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर	25
नबी पर जादू का प्रभाव हो सकता है	26
फ़लक	27
मख़्लूक़ को पुकारना	27
शर (आफ़तें)	28
ग़ासिक़ीन (अन्धेरी रात की बुराई)	28
ह़सद का नुक़्सान	29
शैतानी वस्वस	30
शैतान का चकमा	31
दिलों का वस्वसा	32
जिन्न शैतान	32
इन्सानी शैतान	33
शैतानी वस्वसे से पनाह माँगने की अहमियत	34
इन्सान के दो दुश्मन और उनका इलाज	35
शैतानी चाले कमज़ोर हैं	36
तअ़वीज़ गंडों से परहेज़	37
मुअ़व्विज़तैन हर प्रकार की दुनियावी और दीनी ह़िफ़ाज़त का क़िला है.	38
तअ़वीज़ गंडा करना अफ़ज़ल है या न करना अफ़ज़ल है	39
तअ़वीज़ का ख़ुलासा	39
लटकाई हुई चीज़ के सुपुर्द	40
तवक़्क़ुल की क़िस्में	40
वहमी अस्बाब	41
दीनी अस्बाब	41
अस्बाब जन्नी	41
दुआ़ के आदाब	44
दुआ़ की क़ुबूलियत के औक़ात	44
जिन लोगों की दुआ़एँ जल्द क़ुबूल होती हैं	44
रात के वक़्त पढ़ने की दुआ़एँ	45

विषय	पृष्ठ सं०
सोकर उठने की दुआ़	45
बैतुलख़ुला में दाख़िल होने से पहले और बाद की दुआ़	45
जब फ़ारिग़ होकर निकलें तो पढ़ें	46
उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें	46
घर में दाख़िल होने और निकलने की दुआ़	46
घर से निकलें तो यह दुआ़ पढ़ें	47
उस के बाद आसमान की तरफ़ सर उठाकर यह दुआ़ पढ़ें	47
खाना खाने बैठें तो यह दुआ़ पढ़ें	47
अगर शुरु में दुआ़ भूल गया तो यह पढ़ें	47
जब खाना खा चुकें तो यह दुआ़ पढ़ें	48
जब दस्तरख़्वान उठाया जाने लगे तो यह दुआ़ पढ़ें	48
उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें	48
जब मेज़बान से रुख़सत होने लगे तो यह दुआ़ पढ़ें	48
पानी पीते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें	49
ज़मज़म पीने के आदाब	49
इफ़्तार के वक़्त की दुआ़	49
उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें	49
इफ़्तार के बाद यह दुआ़ पढ़ें	50
जब किसी के यहाँ इफ़्तार करें तो यह दुआ़ पढ़ें	50
जब सफ़र पर निकलें तो यह दुआ़ पढ़ें	50
उस के बाद यह आयत पढ़ें	50
उस के बाद	51
फिर उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें	51
उस के बाद यह दुआ़ माँगें	51
सफ़र से वापस होकर जब अपनी बस्ती में पहुँचे तो यह दुआ़ पढ़ें	52
फिर जब घर में दाख़िल हों तो यह दुआ़ पढ़ें	52
दरयाई या बह़री सफ़र पर रवाना हों तो यह दुआ़ पढ़ें	52
किसी को रुख़सत करते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें	53

विषय	पृष्ठ सं०
रुख़सत होने वाला मुसाफ़िर यह दुआ़ दे	53
मरीज़ की अ़यादत के वक़्त की दुआ़	53
शिफ़ा-ए-मरीज़ की दुआ़	53
जाँकनी के वक़्त की दुआ़	54
रुह़ निकलने के बाद की दुआ़	54
मय्यित को क़ब्र में रखने की दुआ़	54
क़ुर्बानी की दुआ़	54
अ़क़ीक़ा की दुआ़	55
क़ुनूते नाज़िला	55
दुआ़-ए-इस्तिख़ारा	57

सन्देश

ह़ज़रत मौलाना शम्सुल ह़क़ साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुलआ़ली

प्रधान सम्पादक, तामीरे ह़यात व उस्ताद दारूल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

'नहमदुहू वनुसल्ली अ़ला रसूलिहिल् करीम मुह़म्मदुन्नबीइल्उम्मीइल्लज़ी उरसिला इलन्नासि काफ़्फ़तन बशीरंव्व व नज़ीरा।'

बड़ी ख़ुशी की बात है कि हमारे अ़ज़ीज़ दोस्त मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर साह़ब नदवी मौजूदा माह़ौल और ह़ालात में जहाँ अब हिन्दी ज़बान का चलन बढ़ता जा रहा है और ख़ुद मुस्लिम नौजवान भी जो स्कूलों कालेजों में पढ़ रहे हैं, हिन्दी ज़बान ही लिखते और बोलते हैं। दीन इस्लाम के बारे में ऐसी किताबें तैयार कर रहे हैं जो मुसलमानों के अ़लावा दूसरे लोगों के लिए भी जो इस्लाम को जानना चाहें बहुत मुफ़ीद हैं इसलिए कि यह दीन सभी इन्सानों को अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने और फिर आगे आने वाली ज़िन्दगी में काम आने वाली बातों को बताता और उस का शौक़ दिलाता है।

इस से पहले इनकी बहुत सी किताबें आ चुकी हैं, उसी सिलूसिले की इन की यह किताब "झाड़फूँक और तअ़वीज़ गंडा" है। इन्सान फ़ित्री तौर पर शक्की और वहम परस्त होता है। शैतान और ज़्यादा उस के अन्दर ख़यालात और अन्देशे पैदा करता रहता है और कुछ लोगों को काहिन, जादूगर, टोना वग़ैरह का वहम दिला कर तरह़-तरह़ की उलझनों में डालता रहता है जिस से इन्सान झाड़-फूँक का सहारा लेता है जिसमें बहुत सी ऐसी बातें करता है और ऐसे बाबाओं के पास जाता है जो उसके ईमान का सौदा करके उसकी जेब खाली करवा

लेते हैं। जो इन्सान के मर्तबे से बहुत गिरी हुई बात होती है मगर उस की मुसीबत और परेशानी बढ़ाती ही जाती हैं और वह अपने पैदा करने वाले मालिक को नाराज़ कर के उस के ग़ुस्से को भड़काने का ज़रिया बन जाती हैं।

लिहाज़ा ज़रूरी है कि मुसलमान दीन की उन बातों को अच्छी तरह़ जाने जो उस के सुकून, चैन और ह़िफ़ाज़त का सबब हों और गुनाह से भी बचाएँ।

इस किताब में वह सब चीज़ें बहुत अच्छी तरह़ समझा कर और अल्लाह के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ह़दीसों की रौशनी में बयान की गई हैं।

मालिक की उतारी हुई किताब क़ुर्आन की वह सूरतें और आयतें और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की बताई हुई दुआ़एँ बयान की गई हैं उस तअ़वीज़ गंडे से बचाती हैं जो मालिक को पसन्द नहीं और इन दुआ़ओं से दुनिया के सुकून व चैन के साथ-साथ मालिक की ख़ुशी ह़ासिल होती है और आख़िरत की ज़िन्दगी भी बनती है।

हमारी दुआ़ है कि इस किताब से अल्लाह तआ़ला ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को फ़ायदा पहुँचाए और मुसन्निफ़ के जज़्ब-ए-दअ़वत और इन्सानो को सह़ी और सच्चा रास्ता दिखाने के काम में बराबर लगे रहने की तौफ़ीक़ व सलाह़ियत और ज़्यादा से ज़्यादा तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

'अल्लाहुम्मा वफ़ूफ़िक़ना लिमा तुह़िब्बू व तरज़ा'

शम्सुल ह़क़ नदवी
दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा

प्रस्तावना

अमराज़ व परेशानी दूर होने की तीन तद्बीरे हैं, दवा, दुआ, तअ़वीज़, पहली दो चीज़ें तो आ़मतौर से की जाती हैं और तीसरी कभी-कभी कुछ अमराज़ में करने की गुन्जाईश होती है, लेकिन इसमें भी यह है कि दुआ़ को छोड़ना बिलकुल ग़लत है। दवा और तअ़वीज़ के साथ दुआ़ बहुत ज़रूरी चीज़ है।

जिस तरह़ बीमारी का इ़लाज दवा वग़ैरह से होता है उसी तरह़ कुछ मौक़े पर फूँक-झाड़ से भी फ़ायदा हो जाता है, लेकिन सब्र के साथ दवा और दुआ़ करते हुए अगर जायज़ तरीक़े से तअ़वीज़ का शरीअ़त के अन्दर रहते हुए इस्तेमाल किया जाए तो कोई ह़र्ज नहीं।

अ़मलियात व तअ़वीज़ात की शरई़ ह़ैसियत

अ़मलियात व तअ़वीज़ात अगर सह़ी और जायज़ हों तब भी उन की ह़ैसियत दुनियावी अस्बाब और तिब्बी यानी इ़लाज व मुआ़लजा के तद्बीर की तरह़ है।

तिब्बी दवाओं की तरह़ यह भी एक दवा और इलाज है, मुवस्सिर ह़क़ीक़ी नहीं। न इस पर असर मुरत्तब होने का अल्लाह व रसूल की तरफ़ से मुकम्मल वादा हुआ है और न अल्लाह के नाम और कलाम का यह असली काम है।

ह़ासिल यह है कि झाड़-फूँक अ़मलियात व तअ़वीज़ात दूसरे जायज़ कामों की तरह़ एक जायज़ काम है, मगर शर्त यह है कि इस में कोई शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम न किया गया हो, लेकिन अगर इसमें शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल किया गया हो तो नाजायज़ और गुनाह का ज़रिया बनेगा ।

मुबाह़ का ह़ुक्म

मुबाह़ात यानी जायज़ काम दो ह़ाल से ख़ाली नहीं, या तो वह दीन के लिए नफ़अ़ बख़्श होगा। जैसे सेह़त की ह़िफ़ाज़त के लिए चलना फिरना, वरज़िश करना है। अगर वह दीन के लिए फ़ायदेमन्द है तो वह मुबारक और पसन्दीदा है, मगर वाजिब नहीं। लेकिन अगर यही अच्छी नियत से किया जाए तो वह मुस्तह़ब ज़रूर

हो जाता है और उस में सवाब भी मिलता है और अगर वह दीन में नाफ़ेअ़ नहीं तो फ़ुज़ूल है और फ़ुज़ूलियात के तर्क कर देने का शरीअ़त में ह़ुक्म दिया गया है चाहे उन को ह़राम न कहा जाए मगर कराहत से ख़ाली नहीं।

अ़मलियात तअ़वीज़ात और इलाज में फ़र्क़

तअ़वीज़ और इलाज में तो कोई फ़र्क़ नहीं। दोनों ही दुनियावी फ़न हैं। अ़वाम इस में फ़र्क़ समझते हैं कि तअ़वीज़ करने वाले की बुर्ज़ुगी के मोअ़तक़िद होते हैं और किसी डाक्टर तबीब को बुर्ज़ुग नहीं समझते।

अ़वाम की वजह यह समझ में आती है कि डाक्टर के इलाज को दुनियवी काम समझते हैं और आ़मिल के इलाज को दीनी काम समझते हैं और अ़वाम का यह ख़याल इस वजह से है कि अ़मलियात का तअ़ल्लुक़ फ़रिश्तों की दुनिया से है, यह सब जिहालत और ह़क़ीक़त से बेख़बरी है। इसलिए हमें उन तमाम ख़ुराफ़ात से रुक जाना चाहिए जो हमारे अ़क़ीदे को ख़राब करने वाली हों। इसमें आ़म लोग फँसकर अपना अ़क़ीदा ख़राब कर लेते हैं।

इसी को सामने रखते हुए क़ुर्आन व ह़दीस की रोशनी में रहनुमाई फ़रमाई गई है, ताकि इन चीज़ों से एह़तियात करना आसान हो जाए। आख़ीर में दुआ़ की फ़ज़ीलत भी बताई गई है। अल्लाह पाक क़ुबूल फ़रमाकर पूरी उम्मत की इस्लाह़ फ़रमाए।

दुआ़ का तालिब

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

दारूल उलूम नदवतुल उ़लमा लखनऊ

झाड़-फूँक

झाड़फूँक के दुनिया में बहुत से तरीक़े हैं। कुछ लोग कुर्आनी आयत पढ़कर झाड़ते फूँकते या तअ़वीज़ लिखते हैं और कुछ लोग मन्त्र वग़ैरह पढ़कर मरीज़ों, आफ़तज़दों पर फूँकते हैं। जैसे बुख़ार, मिर्गी, आसेब वग़ैरह। इस में एक जायज़ सूरत होती है और दूसरी नाजायज़। जो इस तरह हैं-

झाड़-फूँक की जायज़ क़िस्म

जो शिर्क से खाली हो, और मरीज़ पर कुर्आन की किसी आयत से कुछ पढ़ कर फूँका जाए या फिर अल्लाह तआ़ला के नाम व सिफ़ात का नाम लेकर मरीज़ के लिए पनाह माँगी जाए। यह क़िस्म जायज़ है, इसलिए कि आप (सल्ल०) की ओर से इस की इजाज़त भी साबित होती है। जैसे-

ह़ज़रत औफ़ बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग जाहिलियत में झाड़-फूँक किया करते थे। हम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! इस बारे में हमें क्या फ़रमाते हैं? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

अपनी झाड़-फूँक मुझे भी दिखाओ इस में कोई ह़र्ज नहीं जब तक कि इस के अन्दर शिर्क न हो। **(मुस्लिम)**

अ़ल्लामा सुयूती (रह़०) ने फ़रमायाः झाड़-फूँक या तअ़वीज़ तीन शर्तों के साथ जायज़ है। जैसे-

तअ़वीज़ की जायज़ होने की शर्तें-

(१) **पहली** शर्त यह है कि उस में कलामे इलाही या अल्लाह तआ़ला के अस्मा-ए-

ह़ुस्ना या सिफ़ात इस्तेमाल किये गये हों।

(२) **दूसरी** शर्त यह कि वह अ़रबी ज़बान में हो और उस का मफ़हूम व माने वाज़ेह़ हो।

(३) **तीसरी** शर्त यह कि झाड़-फूँक करने वाले और कराने वाले दोनों का यह एतिक़ाद हो कि यह चीज़ें ख़ुद मुअस्सिर नहीं होती हैं बल्कि अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से होती हैं।

जैसा ह़ज़रत साबित बिन क़ैस (रज़ि०) की एक ह़दीस में आया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बुतह़ान से मिट्टी ली । उस को एक प्याले में लिया कि पानी के ज़रिये उस पर फूँका और पानी को उस पर उंडेल दिया। **(अबूदाऊद)**

झाड़-फूँक की नाजायज़ क़िस्म

झाड़-फूँक की दूसरी क़िस्म वह है जिस में शिर्क पाया जाए, इस तरह़ के झाड़-फूँक में ग़ैरुल्लाह से मदद माँगी जाती है, ग़ैरुल्लाह से दुआ़ की जाती है, ग़ैरुल्लाह की दुहाई दी जाती है, ग़ैरुल्लाह को पुकारा जाता है, उस से पनाह माँगी जाती है, जैसे जिन्न, फ़रिश्ते, अम्बिया या सालिह़ीन के नामों को पढ़ कर फूँकना।

इसमें खुले तौर पर ग़ैरुल्लाह को पुकारा जाता है, जो शिर्क अकबर है या फिर वह अ़रबी के अ़लावा दूसरी ज़बानों में होता है या इस के माने व मफ़हूम वाज़ेह नहीं होते हैं, ऐसी सूरत में पूरा अन्देशा रहता है कि इस में शिर्किया व कुफ़्रिया कलिमात हों और पढ़ने वाले को इस का इल्म न हो लिहाज़ा इस तरह़ के तमाम झाड़-फूँक नाजायज़ हैं।

तअ़वीज़ व गंडा

तअ़वीज़ व गन्डों से मुराद वह तअ़वीज़ हैं जो बच्चों को नज़रे बद् से बचाने के लिए उन के गले में लटकाई जाती हैं और कुछ मर्द व औ़रत दोनों के बड़े बूढ़े भी तअ़वीज़ लटकाते हैं।

तअ़वीज़ की क़िस्में

तअ़वीज़ की भी दो क़िस्में हैं-

१- जायज़

२- नाजायज़

तअ़वीज़ की जायज़ क़िस्म

वह तअ़वीज़ जो क़ुर्आन की आयात के ज़रिये तैयार की गई हो या उन में क़ुर्आन की आयतें लिखी गई हों। या अल्लाह तआ़ला के अस्माउस्सिफ़ात लिखे गये हों और शिफ़ा ह़ासिल करने के लिए मरीज़ ने बाँधे हों, या गले में लटकाए हों, इस तरह़ की तअ़वीज़ लटकाने के सिलसिले में उलमा का इख़्तिलाफ़ है जिसमें दो तरह़ की राय या दो क़ौल हैं।

पहला क़ौल जाएज़ है, यह ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन आ़स का क़ौल है, ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) की रिवायत से भी ज़ाहिरी माने इसी पर दलालत करते है। ह़ज़रत अबू जाफ़र अल् बाक़र, अह़मद बिन ह़म्बल (रह़०) ने भी इस की ताईद की है और इस से मना करने वाली ह़दीस को शिर्किया तअ़वीज़ पर लिया है।

तअ़वीज़ की नाजायज़ क़िस्म

यह ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०), इब्ने अ़ब्बास हुज़ैफ़ा, उ़क़्बा बिन आ़मिर, इब्ने अ़कीम (रज़ि०) वग़ैरह का क़ौल है, कुछ ताबिअ़ीन का भी यही कहना है, इन में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद और एक रिवायत के मुताबिक़ अह़मद भी शामिल हैं, बाद के लोगों ने पूरे ज़ोर के साथ नाजायज़ का फ़त्वा दिया है और ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) की ह़दीस को दलील बनाया है- ह़दीस शरीफ़ है:

मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना कि "झाड़-फूँक, तअ़वीज़ गंडे और जन्तर-मन्तर में शिर्क है।" **(अह़मद, अबूदाऊद)**

जादुई मन्त्र और जड़ी बूटी- यह एक ख़ास जादुई नुस्ख़ा होता है,

जिसे कुछ लोग इस ख़याल से बनाते हैं कि यह बीवी को शौहर की प्यारी और शौहर को बीवी का प्यारा बनाता है।

झाड़-फूँक और गंडे

गंडों में आ़मतौर से गाठें लगाई जाती हैं। गाँठों का मतलब वह गाँठे हैं, जो इन्सान के शुऊर (विवेक) और उसके हवास (चेतना इन्द्रियों) पर लगा कर उसे ग़ाफ़िल और मदहोश बना देती हैं, जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस प्रकार फ़रमाया है।

"जब तुम में से कोई व्यक्ति सोता है तो उसके सर के पिछले ह़िस्से पर शैतान तीन गाँठ लगा देता है और हर गाँठ के साथ यह बात भी दर्ज कर देता है कि अभी रात लम्बी है। जब वह शख़्स जाग उठता है और अल्लाह को याद करता है तो एक गाँठ खुल जाती है, जब वुज़ू करता है तो दूसरी भी खुल जाती है और जब वह नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी भी खुल जाती है, फिर सुबह़ को वह बिलकुल ताज़ा दम पाकीज़ा नफ़्स होता है। दूसरी ह़ालत में वह सुबह़ को सुस्त, कसमसाहट और गन्दा और नापाकी की ह़ालत में होता है।

(मुस्लिम किताबुस्सलातुल मुसाफ़िरीन)

फूँक मारना

फूँकना' ह़दीस में शैतानी क्रिया उत्पन्न होने को शैतान के 'नफ़्स' से तअ़बीर किया गया है।

इस का मतलब वह शैतानी आत्माएँ (नुफ़ूस) हैं, जो अपनी शक्ति द्वारा अनायास इन्सान के विवेक (शुऊर) और उसकी चेतना एवं इन्द्रियों को प्रभावित कर देती हैं।

ऊपर ह़दीस में शैतान के गाँठ बाँधने का ज़िक्र हुआ है, उसमें भी यह बात बयान हुई है कि वह हर गाँठ के साथ यह भी अंकित कर देता है कि अभी रात लम्बी है, यह वास्तव में शैतान का इस गाँठ में नफ़्स (फूँकना) ही है।

इन ह़दीसों की रोशनी में फूँक-झाड़ का मतलब यह है कि शैतान अपनी

उत्प्रेरणा (Inspiration) द्वारा उसकी चेतना, विवेक और इन्द्रियों को प्रभावित करके उसे ग़फ़लत अचेतना, मदहोशी और मनोवैज्ञानिक रोगों का शिकार बनाकर बुरी एवं गुमराह करने वाली बातें सुझा देता है, इसलिए क़ुर्आन की सूरः फ़लक़ में शैतान के शर (फ़ित्ने) से अल्लाह की पनाह माँगी गई है। यह शैतानी उत्प्रेरणा शायरी के रूप में भी हो सकती है, जादू के रूप में भी, लच्छेदार बातों की शक्ल में भी हो सकती है, और गाने की शक्ल में भी, इसलिए कोई कारण नहीं कि इसको किसी एक ही रूप में सीमित समझा जाए।

सिफ़्ली अ़मल (Black Magic वशीकरण) करने वालों के यहाँ तो गंडों में फूँक मारने का तरीक़ा पहले ही से चला आ रहा है, जादू और टोने टोटके करने वाले शैतानों की मदद से यह दुष्ट काम अंजाम देते हैं और लोगों के लिए गुमराही का सामान करते हैं और आजकल हिपनोटिज़्म (HYPNOTISM) के ज़रिये भी इन्सान की चेतना उसके विवेक और उसकी इन्द्रियों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। यह सब शैतानी दुष्कर्म की विभिन्न सूरतें हैं। इस तरह़ की तमाम तकलीफ़ों और मुसीबतों से बचने का सही तरीक़ा यही है कि अल्लाह की पनाह चाही जाए और इस बात पर पक्का यक़ीन रखा जाए कि उसकी इजाज़त के बिना कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती।

आमतौर से मुफ़स्सिरीन ने सूरः फ़लक़ में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर जो जादू किया गया था, उसे नक़्ल किया है, परन्तु इस में बड़ा इख़्तिलाफ़ है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर उसका असर हुआ था या नहीं।

जादू क्या है

जादू वास्तव में एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव है, जो मन से निकलकर शरीर पर उसी प्रकार प्रभाव डालता है, जिस प्रकार शारिरिक प्रभाव शरीर से गुज़र कर मन को प्रभावित करता हैं।

उदाहरण के तौर पर भय एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है, पर उसका प्रभाव शरीर पर इस तरह़ होता है कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और शरीर काँप उठता है। परन्तु जादू से वास्तविकता नहीं बदलती, मगर मुनष्य का मन और उसकी

इन्द्रियाँ उससे प्रभावित होकर यह मह़सूस करने लगती हैं कि वास्तविकता बदल गई है।

ह़ज़रत मूसा की ओर जादूगरों ने जो लाठियाँ और रस्सियाँ फेंकी थीं, वह सचमुच साँप नहीं बनी थीं। लेकिन हज़ारों मजमे की आँखों पर ऐसा जादू किया कि उन्हें साँप ही मह़सूस हुआ और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) तक की इन्द्रियाँ जादू के इस प्रभाव से न बच सकीं।

इस तरह़ क़ुर्आन के सूरः बक़रः आयत नं० १०२ में बयान किया गया है कि बाबुल नामी स्थान में 'हारूत और मारूत' से लोग ऐसा जादू सीखते थे जो पति पत्नी में जुदाई डाल दे। यह भी एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव था और स्पष्ट है कि यदि तजुर्बे से लोगों को इस अ़मल की कामियाबी मालूम होती तो वह इसके ख़रीदार न बन सकते।

जिस तरह़ बन्दूक की निकली हुई गोली या बम भी अल्लाह के हुक्म का मुह़ताज है, उसी तरह़ जादू भी उसकी इजाज़त के बिना कामियाब नहीं हो सकता, तो फिर उसी अल्लाह से दुआ़ करनी चाहिए। किसी बाबा आदि के चक्कर में फंस कर अपने आप को बर्बाद करना अ़क़्लमन्दी नहीं।

इस्लाम और झाड़-फूँक

बहुत सी ह़दीसों में इसका ज़िक्र है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हर रात को सोते वक़्त और ख़ासतौर से बीमारी की ह़ालत में 'मुअ़व्विज़तैन' या कुछ रिवायतों के अनुसार मुअ़व्विज़तैन तीन बार, पढ़कर अपने दोनों हाथों में फूँकते और सिर से पाँव तक पूरे जिस्म पर जहाँ-जहाँ तक आपके हाथ पहुँच सकते उन्हें फेर लेते।

आख़िरी बीमारी में जब आप (सल्ल०) के लिए ख़ुद ऐसा करना सम्भव न रहा तो ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा यह सूरतें (मुअ़व्विज़तैन ख़ुद या ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से) पढ़तीं और आपके मुबारक हाथों की बरकत के विचार से आप ही के हाथ से आपके शरीर पर फेर देतीं।

इस सिलसिले की सही रिवायतें बुख़ारी, मुस्लिम, नसई, इब्ने माज़ा, अबू

दाऊद और मुवत्ता इमाम मालिक में और ख़ुद ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मौजूद हैं।

ह़दीसों में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का एक लम्बा क़ौल ज़िक्र हुआ है, जिस के आख़ीर में हुज़ूर (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि-

झाड़-फूँक न कराने पर जन्नत-

"मेरी उम्मत के वह लोग बिना ह़िसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे वह वह होंगे जो न दाग़ने का इलाज कराते हैं, न झाड़-फूँक कराते हैं, न शगुन लेते हैं, बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं।" **(मुस्लिम)**

नापसन्दीदा अ़मल-

ह़ज़रत मुग़ीरा इब्ने शुअ़बा से रिवायत है कि "अल्लाह के रसूल (सल्ल०) दस चीज़ों को नापसन्द फ़रमाते थे जिनमें से एक झाड़-फूँक भी है, सिवाए मुअ़व्विज़तैन या मुअ़व्विज़ात के।" **(अबू दाऊद, अह़मद, नसई, इब्ने ह़ब्बान, ह़ाकिम)**

कुछ ह़दीसों से यह भी मालूम होता है कि शुरु में हुज़ूर (सल्ल०) ने झाड़-फूँक को बिलकुल मना फ़रमा दिया था, लेकिन बाद में इस शर्त के साथ इसकी इजाज़त दे दी कि फूँक-झाड़ में शिर्क न हो जो जायज़ है, मगर अल्लाह के पाक नामों या उसके कलाम से झाड़ा जाए, और कलाम ऐसा हो जो समझ में आए और यह मालूम किया जा सके कि इसमें कोई गुनाह की चीज़ तो नहीं है और भरोसा झाड़-फूंक पर न किया जाए कि इस से आदमी अच्छा हो जाएगा, बल्कि अल्लाह पर भरोसा किया जाए कि वह चाहेगा तो इस फूँक को मुफ़ीद बना देगा, इस तरह़ की ह़दीसें इस प्रकार हैं;

बिच्छू के काटने पर-

तबरानी ने सग़ीर में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से रिवायत किया है कि हुज़ूर (सल्ल०) को एक बार नमाज़ की ह़ालत में बिच्छू ने काट लिया, जब आप (सल्ल०) नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया बिच्छू पर ख़ुदा की लअ़नत हो, न किसी नमाज़ी को छोड़ता है न किसी और को। फिर पानी और नमक मँगवाया

और जहाँ बिच्छू ने काटा था, वहाँ आप नमकीन पानी मलते थे और सूरः काफ़िरून, सूरः इख़्लास और मुअ़व्विज़तैन पढ़ते जाते थे। **(तबरानी)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से यह भी रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) पर यह दुआ़ पढ़ते थे।

"मैं तुमको अल्लाह के बे-ऐ़ब कलमों की पनाह में देता हूँ, हर शैतान और मूज़ी (तकलीफ़दे चीज़ों) से और बुरी नज़र से।

(बुख़ारी, मुस्नद अह़मद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा, मुवत्ता)

अबुल आस सक़फ़ी का दर्द-

उ़स्मान इब्ने अ़बुल आ़स सक़फ़ी के बारे में मुस्लिम, मुवत्ता, तबरानी और ह़ाकिम में थोड़े शाब्दिक मतभेद के साथ यह भी ज़िक्र हुआ है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से शिकायत की, कि मैं जब से मुसलमान हुआ हूँ, मुझे एक दर्द मह़सूस होता है, जो मुझको मारे डालता है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अपना सीधा हाथ उसी जगह पर रखो जहाँ दर्द होता है, फिर तीन बार 'बिस्मिल्लाह' कहो और सात बार यह कहते हुए हाथ फेरो कि "मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह माँगता हूँ, उस चीज़ की बुराई से जिसे मैं मह़सूस करता हूँ और जिस के आ जाने का मुझे डर है।"

मुवत्ता में यह भी है कि इस के बाद मेरा वह दर्द जाता रहा और इसी चीज़ की तअ़लीम मैं अपने घरवालों को देता हूँ। **(मुस्लिम, मुवत्ता)**

मुस्नद अह़मद और तबरानी में तलक़ इब्ने अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि, मुझे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मौजूदगी में बिच्छू ने काट लिया, हुज़ूर (सल्ल०) ने मुझ पर यह पढ़ कर फूंका और उसी जगह पर हाथ फेरा। **(मुस्नद अह़मद)**

मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है, कि एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) बीमार हुए तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने आकर पूछा, ऐ मुह़म्मद (सल्ल०) क्या आप बीमार हो गए? आपने फ़रमाया हाँ, उन्होंने कहा, "मैं अल्लाह के नाम पर आपको झाड़ता हूँ, हर उस चीज़ से जो आप को तकलीफ़ दे और हर जानदार और बुरे नज़र की बुराई से, अल्लाह आपको शिफ़ा

दे, मैं उस के नाम पर आपको झाड़ता हूँ।" **(मुस्लिम)**

मुस्लिम, मुस्नद अह़मद और इब्ने माजा में ह़ज़रत जाबिर इब्ने अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने झाड़-फूँक से रोक दिया था। फिर ह़ज़रत अम्र बिन ह़ज़्म के परिवार के लोग आए और कहा कि हमारे पास एक अ़मल था जिससे हम बिच्छू (या साँप) के काटे को झाड़ते थे मगर आपने इस काम से मना फ़रमा दिया है। फिर उन्होंने वह चीज़ आप को सुनाई जो वह पढ़ते थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया,'इसमें तो मैं कोई हर्ज नहीं पाता। तुम में से जो व्यक्ति अपने किसी भाई को लाभ पहुँचा सकता है, वह ज़रूर पहुँचाए।" **(मुस्लिम, मुस्नद अह़मद)**

जाबिर इब्ने अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की दूसरी ह़दीस मुस्लिम में यह है कि ह़ज़्म-परिवार के पास साँप काटे का अ़मल था और हुज़ूर (सल्ल०) ने उनको इसकी इजाज़त दे दी। जिसकी तस्दीक़ में मुस्लिम, मुस्नद अह़मद और इब्ने माजा में ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का क़ौल भी मिलता है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने अन्सार के एक परिवार को हर विषैले जानवर के काटने को झाड़ने की इजाज़त दे दी थी।

मुस्नद अह़मद, तिर्मिज़ी, मुस्लिम और इब्ने माजा में ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से भी इसी तरह़ के मिलते-जुलते क़ौल मौजूद हैं। जिनमें हुज़ूर (सल्ल०) ने विषैले जानवरों के काटे और ज़ुबाब के रोग और बुरी नज़र से झाड़ने की इजाज़त दे दी थी।

झाड़-फूँक और दवाएँ लाभदायक हैं या नहीं

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने दवा और इलाज से कभी मना नहीं फ़रमाया बल्कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हर मर्ज़ की दवा अल्लाह ने पैदा की है तुम लोग दवा किया करो।

हुज़ूर (सल्ल०) ने ख़ुद लोगों को कुछ रोगों के इलाज बताए, लेकिन यह भी बताया कि दवा भी अल्लाह के हुक्म से फ़ायदा पहुँचाती है, वरना यदि दवा और इलाज हर ह़ाल में फ़ायदा पहुँचाती तो अस्पतालों में कोई न मरता।

यदि दवा और इलाज करने के साथ अल्लाह के कलाम (क़ुर्आन मजीद) और उसके पवित्र नामों से अल्लाह ही से मदद चाही जाए तो यह भौतिकवादियों के अ़लावा किसी भी बुद्धि के भी विरुद्ध नहीं है और अब इस प्रयोगों के आधार पर भौतिकवादी भी इस के लाभ को स्वीकार करने लगे हैं। परन्तु यह भी सह़ी नहीं कि दवा और इलाज को, जहाँ वह मिल सके, जानबूझ कर छोड़ दिया जाए और सिर्फ़ झाड़-फूँक को ही काफ़ी समझ लिया जाए और कुछ लोग अ़मल और तअ़वीज़ों की दुकानें खोल कर बैठ जाएँ और उसी को कमाई का साधन बना लें।

तअ़वीज़ के मामले में बहुत से लोग ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि०) की उस रिवायत से दलील लेते हैं जो बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मुस्नद अह़मद, अबू दाऊद और इब्ने माजा से नक़्ल हुई है और जिसकी तस्दीक़ बुख़ारी में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ौल भी करता है।

उसमें यह भी कहा गया है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने एक मुहिम पर अपने कुछ साथियों को भेजा जिनमें ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि०) भी साथ थे। यह लोग रास्ते में अ़रब के एक क़बीले की बस्ती पर जाकर ठहरे और उन्होंने क़बीले वालों से कहा कि हमारी मेज़बानी करो, उन्होंने इन्कार कर दिया। इतने में क़बीले के सरदार को बिच्छु ने काट लिया, और वह लोग उन मुसाफ़िरों के पास आए और कहा कि तुम्हारे पास कोई दवा या अ़मल है, जिससे तुम हमारे सरदार का इलाज कर दो।

ह़ज़रत अबू सई़द (रज़ि०) ने कहा कि तुमने चूंकि हमारी मेज़बानी से इन्कार किया है, इसलिए जब तक तुम लोग कुछ दोगे नहीं, उस वक़्त तक हम उसका इलाज न करेंगे। उन्होंने बकरियों का एक रेवड़ (कुछ कथनों में ३९ बकरियाँ) देने का वादा किया और ह़ज़रत अबू सई़द (रज़ि०) ने जाकर उस पर सूरः फ़ातिह़ा पढ़नी शुरु की और होठों पर लुआ़ब (राल) उस पर मलते गये। यहाँ तक कि बिच्छू का प्रभाव ख़त्म हो गया और क़बीले वालों ने जितनी बकरियों के देने का वादा किया था, वह लाकर दे दीं। मगर इन लोगों ने आपस में कहा कि इन बकरियों से कोई फ़ायदा न उठाए, जब तक अल्लाह के रसूल (सल्ल०)

से पूछ न लिया जाए कि इस काम पर कुछ लेना जायज़ है या नहीं। अतः यह लोग हुज़ूर (सल्ल०) के पास हाज़िर हुए और पूरी बात बताई। हुज़ूर (सल्ल०) ने हँस कर फ़रमाया तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह सूरः झाड़ने के काम भी आ सकती है? बकरियाँ ले लो और इनमें मेरा हिस्सा भी लगाओ।

(बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

इस हदीस को लेकर तअ़वीज़, गंडे और झाड़फूँक की दुकान चलाने को सिद्ध करने से पहले अ़रब की परिस्थितियों को भी सामने रखना चाहिए। जिसमें हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) ने यह काम किया था और हुज़ूर (सल्ल०) ने उसे न सिर्फ़ जायज़ बताया बल्कि कहा, मेरा भी हिस्सा लगाओ ताकि इस के जायज़ व नाजायज़ के बारे में कोई शंका बाक़ी न रहे।

अ़रब की हालत उस समय भी और आज तक यही है कि सौ-दो सौ मील तक आदमी को एक बस्ती से चलकर दूसरी बस्ती नहीं मिलती और बस्तियाँ भी उस समय ऐसी न थीं जिनमें होटल, सराय या खाने की दुकानें मौजूद हों और यात्री कई-कई दिन की यात्रा करके जब वहाँ पहुँचे तो खाने-पीने का सामान ख़रीद सके।

इन परिस्थितियों में यह बात अ़रब की प्रसिद्ध नैतिक मान्यताओं में शामिल थीं कि मुसाफ़िर जब किसी बस्ती पर पहुँचे तो बस्ती के लोग उनकी मेज़बानी करते। इस से इन्कार का अर्थ तो कभी-कभी यात्रियों के लिए "मौत" हुआ करता था और अ़रब में इस काम को बड़ा ही नफ़रत वाला समझा जाता था।

इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने साथियों को इस कार्य को जायज़ समझा कि जब क़बीले वालों ने मेज़बानी से इन्कार कर दिया, तो इन लोगों ने उनके सरदार का इलाज करने से भी इन्कार कर दिया और इस शर्त पर उसका इलाज करने को तैयार हुए कि वह उनको कुछ बदले में दें।

इस तरह उनमें से एक साहब ने अल्लाह के भरोसे पर सूरः फ़ातिहा पढ़कर उस सरदार पर फूँकी जिससे वह अच्छा हो गया तो तय किया हुआ मुआ़वज़ा क़बीले वालों ने लाकर दे दिया और हुज़ूर (सल्ल०) ने इस मुआ़वज़े के लेने को हलाल व जायज़ क़रार दिया।

बुख़ारी की इस घटना के बारे में हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) का जो कथन है, उसमें हुज़ूर (सल्ल०) के यह शब्द हैं कि-

"इन्ना अहक़्क़ु मा अखज़ुमु अ़लैहि अजरन किताबुल्लाहि"

'अर्थात बजाए इसके कि तुम कोई और अ़मल करते, तुम्हारे लिए यह ज़्यादा बेहतर था कि तुमने अल्लाह की किताब पढ़कर उस पर मुआ़विज़ा लिया।'

यह आप (सल्ल०) ने इसलिए फ़रमाया कि दूसरे तमाम अ़मलियात से अल्लाह का कलाम सबसे अफ़ज़ल है। इसके अ़लावा इस तरह अ़रब के उस क़बीले पर इस्लाम के प्रचार का हक़ भी अदा हो गया कि उन्हें इस कलाम की बरकत मालूम हो गई, जो अल्लाह की ओर से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर उतरा है और शिफ़ा भी हो गई है।

झाड़-फूँक करके ज़िन्दगी गुज़ारने और लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने का प्रमाण या उदाहरण हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़माने या बाद के युग में कहीं नहीं मिलता।

सहर (जादू) और सिफ़ली अ़मल

सहर को सहर इसलिए कहा जाता है कि यह सिफ़ली आ़माल के वजूद में आने का ज़रिया हैं, जिसे हमारी आँखें नहीं देख सकतीं। सहर में मन्त्र, झाड़ फूंक, कुछ कलिमात, जड़ी बूटी व धूनी वग़ैरह सब शामिल होते हैं। सहर के वजूद में कोई शक नहीं, बाज़ सहर दिलों में असर करता है और बाज़ जिस्मों में, जिस के असर से आदमी बीमार हो जाता है और बाज़ में मर भी जाता है, इस से इन्सान और उस की बीवी के दर्मियान अलगाव भी कर दिया जाता है। सहर का असर अल्लाह तआ़ला की तक़दीरी कायनाती इजाज़त से है, यह सरासर शैतानी अ़मल है।

कुछ लोग तो सहर सीखने के लिए शिर्क और अरवाह से तक़र्रुब के बहुत से मराहिल तय करते हैं, फिर शिर्क के ज़रिये उन अरवाह की ख़िदमत हासिल करते हैं, इसलिए शरीअ़त ने शिर्क में इस का ज़िक्र किया है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया-

"सात मोहलिक चीज़ों से बचो, लोगों ने सवाल किया वह सात चीज़ें क्या है? ऐ अल्लाह के रसूल! तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना और सह़र।" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

सह़र और शिर्क

सह़र दो एतिबार से शिर्क में दाख़िल है।

(१) इस में शयातीन की ख़िद्मत ह़ासिल की जाती है, शयातीन से तअ़ल्लुक़ क़ायम किये जाते हैं, शयातीन की ख़िद्मत में उन की मह़बूब व मरग़ूब चीज़ें पेश की जाती हैं, ताकि वह जादूगर की ख़िद्मत में लगा रहे, जादू शयातीन की तअ़लीमात में से है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ "बल्कि शैतान ही कुफ़्र करते थे, लोगों को जादू सिखाते थे।" **(सूरः बकरः- १०२)**

(२) इस के शिर्क होने की दूसरी दलील यह है कि इस में इल्म ग़ैब का दावा किया जाता है और इस में अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक होने का भी दावा होता है, जो सरासर कुफ़्र व गुमराही है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ "और वह जानते थे कि जो शख़्स ऐसी चीज़ों (यानी सह़र और मन्त्र वग़ैरह) का ख़रीदार होगा उस का आख़िरत में कुछ ह़िस्सा नहीं।" **(अल् बक़रः-१०२)**

जब मामला ऐसा है तो इस में कोई शक नहीं कि यह सरासर कुफ़्र व शिर्क है जो इस्लामी अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ है।

काहिन व नुजूमी

काहिन व नुजूमी दोनों इल्म ग़ैब और ग़ैबी उमूर से वाक़फ़ियत का दावा

करते हैं, जैसे आइन्दा क्या होने वाला है फिर इस का क्या नतीजा निकलेगा, गुमशुदा चीज़ कहाँ है वग़ैरह, इन सब चीज़ों में शयातीन की ख़िद्मत ह़ासिल की जाती है ख़ासतौर पर उन शयातीन की जो आसमानों से ख़बरें चुराते हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ۝ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ۝ "क्या 'मैं' तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं? हर ढ़ोंग रचने वाले गुनहगार पर उतरते हैं; वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर लोग झूठे होते हैं।"

(सूरः शूरा-२२१,२२२,२२३)

यह सब कुछ इस तरह़ होता है कि शैतान फ़रिश्तों की बातों में से कुछ चोरी छिपे सुन लेते हैं और काहिन के कान में डाल देते हैं, फिर काहिन इस बात में अपनी तरफ़ से सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं, फिर लोग इस एक सच बात की वजह से उस की सारी झूठ को सच मान लेते हैं।

जब कि इल्म ग़ैब का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को है, लिहाज़ा कोई अगर दावा करता है कि कहानत या दीगर ज़राए से वह इस इल्म में अल्लाह तआ़ला का शरीक है या ऐसा कहने वाले की तस्दीक़ करता है तो वह अल्लाह तआ़ला के लिए शरीकेकार का इक़रार करता है, ख़ुद कहानत शिर्क से खाली नहीं, इसलिए कि इस में शयातीन को उस की मह़बूब चीज़ें पेश की जाती हैं, यह अल्लाह तआ़ला की रुबूवियत में शिर्क है, इसलिए कि इस में अल्लाह तआ़ला के इल्म में शिरकत का दावा किया जाता है, यह अल्लाह तआ़ला की उलूहियत में शिर्क है इसलिए कि इस में इबादत के ज़रिये ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब ह़ासिल किया जाता है।

जादू, काहिन और नुजूमी का पेशा

जादू, काहिन और नुजूमी का पेशा अपनाना ह़राम और शैतान की तरफ़ से हैं, जो अ़क़ीदा में ख़लल डालते हैं या उस में नुक़्स पैदा करते हैं, इसलिए कि

यह चीज़ें बिना शिर्किया आ़माल के ह़ासिल नहीं होतीं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर जादू

हुदैबिया समझौते के बाद जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) मदीना वापस तशरीफ़ ले आये तो मुह़र्रम सन् ०७ हिजरी में ख़ैबर से यहूदियों का एक मण्डल आया और एक मशहूर जादूगर 'लबीद इब्ने आसिम' से मिला जो अन्सार के क़बीले बनी ज़ुरैक़ से तअ़ल्लुक़ रखता था। इन लोगों ने उससे कहा कि मुह़म्मद (सल्ल०) ने हमारे साथ जो कुछ किया है वह तुम्हें मालूम है। हमने उन पर बहुत जादू करने की कोशिश की पर कोई कामियाबी नहीं मिली। अब हम तुम्हारे पास आये हैं, क्योंकि तुम हम से बड़े जादूगर हो, यह तीन अशर्फ़ियाँ क़ुबूल करो और मुह़म्मद (सल्ल०) पर ज़ोरदार जादू करो। उसी ज़माने में ह़ुज़ूर (सल्ल०) के यहाँ एक यहूदी लड़का नौकर था, उस से साँठ-गाँठ करके इन लोगों ने ह़ुज़ूर (सल्ल०) की कंघी का एक टुकड़ा ह़ासिल कर लिया, जिसमें आप (सल्ल०) के मुबारक बाल थे, इन्हीं बालों और कंघी के दंदानों पर उसने जादू का अ़मल किया।

कुछ रिवायतों में यह है कि 'लबीद इब्ने आसिम' ने ख़ुद जादू किया था और कुछ में यह है कि उसकी बहनें उससे बड़ी जादूगरनियाँ थीं, उनसे उसने जादू करवाया था। बहरह़ाल इस जादू को एक नर खजूर के गुच्छे के ग़िलाफ़ में रखकर 'लबीद' ने 'बनी ज़ुरैक़' के कुएँ 'जरवान' या 'जीअज़वान' नामी कुएँ की तह में एक पत्थर के नीचे दबा दिया, जिसका असर नबी (सल्ल०) पर होते-होते पूरा एक साल लग गया।

इसी को मुस्नद अह़मद में बयान किया गया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर एक यहूदी ने जादू कर दिया था, जिस के असर से आप (सल्ल०) बीमार हो गये थे, उस पर ह़ज़रत जिब्रईल अमीन ने आकर आप (सल्ल०) को बताया कि आप (सल्ल०) पर एक यहूदी ने जादू किया है और जादू का अ़मल जिस चीज़ में किया गया है, वह फ़लाँ कुआँ के अन्दर है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने वहाँ आदमी भेजा तो वह लोग उन जादू की चीज़ों को उस में से निकाल कर ले आए जिसमें गाठें लगी हुई थीं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उन गाँठों को खोल दिया। उसी वक़्त आप (सल्ल०) बिलकुल तन्दुरुस्त होकर खड़े हो गये जबकि आप (सल्ल०) को ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने उस यहूदी का नाम बतला दिया था और आप (सल्ल०) उसको जानते भी थे, मगर आप (सल्ल०) का किसी मामले में किसी से बदला लेने का मिज़ाज न था, इसलिए उम्र भर उस यहूदी से कुछ नहीं कहा और न कभी उस की मौजूदगी में आप (सल्ल०) के चेहरे से किसी शिकायत के आसार पाये गये (वह मुनाफ़िक़ होने की वजह से ह़ाज़िर भी होता था।)

सह़ी बुख़ारी में ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि "आप (सल्ल०) पर एक यहूदी ने जादू किया तो उस का असर आप (सल्ल०) पर यह हुआ कि बाज़ औक़ात आप (सल्ल०) मह़सूस करते थे कि फ़लाँ काम कर लिया है, मगर वह नहीं किया होता।"

लबीद बिन आ़सिम का जादू-

एक दिन आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत आ़ईशा (रज़ि०) से फ़रमाया, "मुझे अल्लाह तआ़ला ने बतला दिया है कि मेरी बीमारी क्या है? और फ़रमाया कि (ख़्वाब में) दो व्यक्ति आये, एक मेरे सरहाने बैठ गया एक पाँव की तरफ़, सरह़ाने वाले ने दूसरे से कहा कि इन को क्या तकलीफ़ है? दूसरे ने कहा कि इन पर जादू किया गया है। उसने पूछा कि जादू इन पर किसने किया है? तो उसने जवाब दिया कि 'लबीद बिन आसिम' ने जो यहूदियों का दोस्त मुनाफ़िक़ है।

उससे पूछा कि किस चीज़ में जादू किया गया है, उस ने बताया कि एक कंघे और उसके दानों में। फिर उसने पूछा कि वह कहाँ है तो उसने बतलाया कि खजूर के उस ग़िलाफ़ में जिसमें खजूर का फल पैदा होता है। 'बेरे ज़रवान' (एक कुआँ का नाम है) में एक पत्थर के नीचे गड़ा है।" आप (सल्ल०) उस कुएँ पर तशरीफ़ ले गये उसको निकाल लिया और फ़रमाया, "मुझे ख़्वाब में यही कुआँ दिखलाया गया था।"

ह़ज़रत आ़ईशा (रज़ि०) ने फ़रमाया, "आप (सल्ल०) ने इसका एलान क्यों नहीं कर दिया? कि फ़लाँ आदमी ने यह ह़रकत की है।"

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुझे अल्लाह ने शिफ़ा दे दी और मुझे यह पसन्द नहीं कि मैं किसी आदमी के लिए तकलीफ़ का ज़रिया बनूँ।" (मतलब यह था कि इसका एलान होता तो लोग उसको क़त्ल कर देते या तकलीफ़ पहुँचाते।)

छः महीने तक-

मुस्नद अह़मद की एक रिवायत में है कि आप (सल्ल०) का यह मर्ज़ छः महीनों तक रहा कुछ दूसरी रिवायतों में है कि जिन सह़ाब-ए-किराम को मालूम हो गया था कि यह काम 'लबीद बिन आसिम' ने किया है, उन्होंने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया कि हम इस ख़बीस को क्यों न क़त्ल कर दें, आप (सल्ल०) ने वही जवाब दिया, जो ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को दिया था

और इमाम सालबी की रिवायत में है कि एक लड़का ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िदमत किया करता था, उस मुनाफ़िक़ यहूदी ने उस को बहला फुसला कर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का कंघा और कुछ उस के दाने उससे ह़ासिल कर लिए और एक ताँत में ग्यारह गिरहें लगाई, हर गिरह में एक सुई लगाई, कंघे के साथ उसको खजूर के फल के ग़िलाफ़ में रखकर एक कुएँ में पत्थर के नीचे दबा दिया, अल्लाह तआ़ला ने सूरः नास और सूरः फ़लक़ दो सूरतें नाज़िल फ़रमाईं, जिन में ग्यारह आयतें हैं, आप (सल्ल०) ने हर गिरह पर एक-एक आयत पढ़ कर एक-एक गाँठ खोलते रहे। यहाँ तक कि सब गिरहें खुल गईं और आप (सल्ल०) से अचानक एक बोझ सा उतर गया।

(यह सब रिवायतें तफ़्सीर इब्ने कसीर की हैं)

जादू का प्रभाव ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर

यदि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर जादू के असर को मान भी लिया जाए तो आप (सल्ल०) के नबूवत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इसलिए कि अगर आप (सल्ल०) को व्यक्तिगत रूप से घायल किया जा सकता है, जैसा कि उह़द की लड़ाई में हुआ; अगर आप घोड़े से गिर कर चोट खा सकते थे, जैसा कि इन

ह़दीसों से साबित है; और आपको बिच्छू काट सकता था, इस में कोई चीज़ भी उस ह़िफ़ाज़त के ख़िलाफ़ नहीं आ रही, जिसका नबी होने की ह़ैसियत से अल्लाह ने आप से वादा किया था तो आप का अपनी व्यक्तिगत ह़ैसियत में जादू के प्रभाव से बीमार होना कोई अनहोनी बात न थी।

नबी पर जादू का प्रभाव हो सकता है-

नबी पर जादू का प्रभाव हो सकता है, जिसका उल्लेख कुर्आन की सूरः अ़राफ़ में फ़िरऔ़न के जादूगरों के बारे में किया गया है कि "जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के मुक़ाबिले में वह आए तो उन्होंने हज़ारों आदमियों के उस पूरे मजमे की आँखों पर जादू कर दिया, जो वहाँ दोनों का मुक़ाबिला देखने के लिए जमा हुए थे।" **(आयत नं० २१६)**

सूरः ताहा में है "कि जो लाठियाँ और रस्सियाँ उन्होंने फेंकी थीं उनके बारे में आम लोगों ने ही नहीं, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने भी यही समझा था कि वे उनकी ओर साँपों की तरह़ दौड़ी चली आ रही हैं और इससे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ख़ौफ़ज़दा हो गए, यहाँ तक कि अल्लाह ने उन पर वह्य उतारी कि ख़ौफ़ न करो, तुम्हीं कामियाब होगे, ज़रा अपनी लाठी फेंको।"

(सूरः ताहा आयत नं० ६६ से ६९ तक)

ऐसी ह़ालत में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से फ़रमाया गया, "इन लोगों से कह दें कि पनाह माँगता हूँ, सुबह़ के उगाने वाले रब की, तमाम जानदार की बुराई से, रात के अंधेरे, जादूगरों, जादूगरनियों की बुराई से और ह़ासिदियों की बुराई से।"

और उनसे कह दो कि "मैं पनाह माँगता हूँ, इन्सानों के रब, इन्सानों के बादशाह और इन्सानों के मअ़बूद की हर उस वस्वसा पैदा करने वाली बुराई से, जो बार-बार पलट कर आती है, और लोगों के मन में भ्रम पैदा करती है। चाहे वह जिन्नों में के शैतान हों या इन्सानों में के।

इस तरह़ इन मौक़ों पर कुल अऊ़ज़ू बिरब्बिल फ़लक़ और कुल अऊ़ज़ू बिरब्बिन्नास पढ़ने का हुक्म दिया गया है, जिसका मतलब इस तरह है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝

पनाह का अर्थ होता है सुरक्षा, बचाव और शरण अर्थात पनाह माँगने का मतलब होता है अपनी हिफ़ाज़त के लिए पनाह देने वाली हस्ती से दुआ करना उसकी तरफ़ पलटना, उसकी ओर झुकना।

'अऊज़ू' मैं पनाह माँगता हूँ का मतलब यह है कि मैं ख़ुदा को एक अकेला पनाह देने वाला मानकर अपने आपको उसकी हिफ़ाज़त में देता हूँ। वह हर तरह के शर (बुराई) मुसीबत, फ़ित्नों से बचाने वाला है और मैं उसी से बन्दगी का तअ़ल्लुक़ बनाता हूँ।

अतः किसी देवी- देवता या पीर फ़क़ीर की पनाह माँगना खुला शिर्क है।

'फ़लक़'-

फ़लक का शाब्दिक अर्थ होता है, पौ फटना, अर्थात सुबह़ को प्रकट करने वाला। जो अल्लाह रात के अन्धकार का पर्दा चीर कर सुबह़ प्रकट करता है, वह अल्लाह उसी तरह़ ख़ौफ़ को दूर करके पनाह माँगने वाले को अम्न क्यों नहीं दे सकता। इन्सान को जिस तरह़ रात में इस बात का इन्तिज़ार रहता है कि सुबह़ होगी, उसी तरफ़ ख़ौफ़ज़दा आदमी पनाह के ज़रिये इस विश्वास और संतोष को प्रकट कर रहा होता है कि जो ह़स्ती अंधकार को फाड़ कर सुबह़ लाती है, वही मायूसी की ह़ालत में उम्मीद की किरण भी पैदा करेगी, और फ़ित्नों (शर) की भरमार को छाँट कर शांति और हिफ़ाज़त की राह भी खोलेगी।

इस आयत में जिस तरह़ शैतान और उसके गिरोह से पनाह चाही गई है उसी तरह जहन्नम और हर उस चीज़ से पनाह चाही गई है, जिस से इन्सान को नुक़सान पहुँच सकता हो।

मख़्लूक़ को पुकारना-

चूँकि दुनिया की तमाम वस्तुओं का वही तन्हा ख़ालिक़ (सृष्टा) और मालिक है, इसलिए कोई भी चीज़ क़ायनात के पैदा करने वाले से ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो सकती। अतः मख़्लूक़ के शर (फ़ित्नों) से बचने के लिए ख़ालिक़ की पनाह

ढूँढ़ना ही सही तरीक़ा है। इसके ख़िलाफ़ मख़्लूक़ (सृष्टि) के शर (फ़ित्नों) से बचने के लिए किसी मख़्लूक़ की दुहाई देना, या इस मक़्सद के लिए किसी देवी देवता को पुकारना या किसी गौस, पीर, फ़क़ीर या वली को पुकारना सरासर मूर्खता है।

इसी तरह़ कोई भी चीज़ स्वयं अपने आप से प्रभावपूर्ण नहीं बल्कि हर चीज़ अल्लाह के हुक्म ही से प्रभाव डालती है, और जिस के साथ कोई शर लग जाता है, वह भी उसी के हुक्म से होता है। इसलिए शर से बचने के लिए सिर्फ़ उसी से दुआ करनी चाहिए।

शर (आफ़तें)-

शर से मुराद मह़सूस होने वाली आफ़तें, बलाएँ हैं और दूसरे नुक़सानात और गुमराहियाँ भी। पहली चीज़ की मिसाल बीमारियाँ कष्ट हैं और दूसरी चीज़ की मिसाल गुनाह, कुफ़्र व शिर्क हैं। आयतों के संदर्भ के मुताबिक़ शर का यह दूसरा भाग है। इसलिए इस सूरः को कुर्आन के सबसे आख़ीर में रखा गया है, जो इस बात की ओर संकेत है कि कुर्आन ने जो हिदायत की है, उसकी हिफ़ाज़त के सिल्सिले में चौकन्ना रहने की ज़रूरत है ताकि फ़ित्नों को मह़बूब रखने वाली ताक़तें भटकाने में कामियाब न हो सकें।

ग़ासिक़िन (अंधेरी रात की बुराई)-

अंधेरी रात के शर से भी पनाह चाही गई है जब रात आती है तो अंधेरा छा जाता है और उस अंधकार में शरीर और शैतानी ताक़तों के उभरने का मौक़ा मिलता है। ज़ाहिरी और शारीरिक आफ़तों के एतिबार से बीमारियाँ रात में बढ़ती हैं और ख़तरनाक जानवर रात में निकलते हैं।

अर्थात रात में डर और भय का माह़ौल रहता है। रही आन्तिरक और नैतिक (अख़्लाक़ी) आफ़तें, तो रात ही में अपराध भी ज़्यादा होते हैं, तमाम षडयंत्र (मन्सूबे-प्लान) रात ही में किये जाते हैं और शैतान अपने लश्कर के साथ अन्धेरे में हमलावर होता है। इसलिए रात का ज़ाहिरी अंधकार आन्तिरक अंधकार के कारण हो सकता है, अतः इस शर की तरफ़ से चौकन्ना रहने का अल्लाह ने हुक्म दिया है।

लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि रात में ख़ैर (नेकी, भलाई, शाँति) नहीं होती या ख़ैर के काम नहीं होते। यहाँ पर तो केवल रात की बुराई से पनाह चाही गई है।

ह़सद का नुक़्सान-

'ह़सद' (ईर्ष्या) का मतलब यह है, कि यदि अल्लाह तआ़ला ने किसी व्यक्ति को अपनी किसी नेअ़मत या फ़ज़ीलत से नवाज़ा हो तो दूसरा व्यक्ति उस पर जलने लगे और इस की इच्छा करे कि उस से छिन जाए।

"ह़सद (ईर्ष्या) करने वाला जब ह़सद (ईर्ष्या) करे" का मतलब यह है कि ह़ासिद जब ह़ासिदाना (ईर्ष्यापूर्ण) कार्रवाई करने लगे और ईर्ष्या के जोश में कोई क़दम उठा ले तो ऐसे मौक़े पर उसके शर (फ़ित्नों), उसकी यातनाओं और उसकी पीड़ा से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगना चाहिए। ह़ासिद (ईर्ष्या करने वाले) का लफ़्ज़ सब पर लागू होता है, किन्तु यह भी एक ह़क़ीक़त है कि ह़सद (ईर्ष्या) की शुरुआ़त शैतान ही से हुई है, जबकि अल्लाह तआ़ला ने आदम को पैदा करके ज़मीन की ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) का ताज उसके सर पर रखा था। इसी फ़ज़ीलत के आधार पर शैतान इन्सान का दुश्मन बन गया और चाहता है कि इन्सान भटक जाए।

ह़सद ह़राम और गुनाह कबीरा है, यही सब से पहला गुनाह है, जो आसमान में किया गया और यही सबसे पहला गुनाह है जो ज़मीन में किया गया, क्योंकि आसमान में इब्लीस ने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से ह़सद किया और ज़मीन पर उन के बेटे 'क़ाबील' ने अपने भाई 'हाबील' से किया। **(क़ुर्तुबी)**

एक मोमिन को जब किसी ह़ासिद (ईर्ष्या करने वाले) से मामला पेश आये तो वह उसके फ़ित्नों से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगे। इस तरह़ वह अपने गुस्से को भी क़ाबू में रख सकेगा और अल्लाह की मदद का भी योग्य अधिकारी होगा। इस आयत के अन्त में ह़ासिद के शर (फ़ित्नों) से पनाह माँगने की जो हिदायत दी गई है, उस से एक अहम बात की तरफ़ इशारा जो मिलता है, वह यह कि ईमान लाने वाले ख़ूब समझ लें कि इस हिदायत नामा (क़ुर्आन) के

ज़रिये उन्हें बड़ी नेअ़मत और बड़ी इ़ज़्ज़त मिली है।

इस पर उनके दुश्मनों का उन्हें ईर्ष्यालु दृष्टि से देखना और तौह़ीद से जो हिदायत की अस्ल बुनियाद है, उन्हें फेरने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना हरगिज़ आश्चर्यजनक नहीं।

इसलिए चाहिए कि अपने ह़ासिदों (ईर्ष्या करने वालों) की शरारतों और उनके षडयंत्रों की तरफ़ से चौकन्ना रहे और उनके फ़ित्नों (शर) से बचने के लिए अल्लाह का सहारा लें।

सूरः फ़लक़ में तीन चीज़ों से विशेष रूप से पनाह माँगने का ज़िक्र है, परन्तु पहली और तीसरी में तो एक को दूसरे से शर्त के साथ जैसे- 'ग़ासिक़िन' के साथ 'इ़ज़ा वक़ब' और 'ह़ासिदिन' के साथ 'इ़ज़ा ह़सद' फ़रमाया और दर्मियानी चीज़ अर्थात जादू में कोई शर्त नहीं रखी, क्योंकि जादू का नुक़सान आ़म है और रात का नुक़सान उसी वक़्त होता है जब पूरे तौर पर अंधेरा हो जाए। इसी तरह़ ह़ासिद का ह़सद जब तक वह अपने ह़सद की वजह से किसी को तकलीफ़ पहुँचाने का क़दम न उठा ले नहीं होता बल्कि उस व़क़्त तक तो उल्टा उसी का नुक़सान होता है कि दूसरों की नेअ़मत को देखकर जलता और कुढ़ता है, जिससे उसका सुकून ख़त्म हो जाता है।

शैतानी वस्वसे

'वस्वसा' का अर्थ बुरी बात और बुरे ख़याल के हैं, जो इस तरह़ से किसी के दिल में डाला जाए कि उसे मह़सूस तक न हो। 'वस्वासि' का अर्थ है, वस्वसा अन्दाज़ी करने वाला। यह शैतान की सिफ़त है और उसकी दूसरी सिफ़त 'ख़न्नास' है, जो 'ख़ुनूस' से बना है, जिसके अर्थ छिपने, ग़ायब हो जाने और पीछे हटने के हैं, और एक अर्थ सिकुड़ने के भी हैं।

शैतान जब इन्सान को किसी गुनाह पर आमादा करना चाहता है, तो वह गुनाह के काम बड़े सुन्दर रूप से प्रस्तुत करता है, और अच्छे परिणाम की उम्मीद दिलाता है। यही चीज़ वस्वसे की सूरत में इन्सान के दिल में दाख़िल होती है, जब वह उसके असर से प्रभावित हो जाता है, और उसे स्वीकार करता है, तो यह

ख़याल पुख़्ता होकर इरादा और आचरण का रूप धारण कर लेता है। सबसे पहले वस्वसा अन्दाज़ी शैतान ने आदम और हव्वा पर किया था।

"फिर शैतान ने उन पर वस्वसा अंदाज़ी की, ताकि उनकी शर्मगाह जो एक दूसरे से पोशीदा (गुप्त) रखी गई थी, उनके सामने खोल दे, और कहा कि तुम्हारे रब ने तुमको इस वृक्ष से इसलिए रोका है, कि तुम कहीं फ़रिश्ता न बन जाओ या तुम्हें अनन्त जीवन न प्राप्त हो जाए, उसने क़सम खा कर कहा कि मैं तुम्हारा भला चाहने वाला (शुभचिन्तक) हूँ। **(अल् अअ़राफ़ २०,२१)**

शैतान का चकमा

ऊपर की बातों से मालूम हुआ कि किस तरह़ शैतान शुभचिंतक बन कर आता है, गुनाह की ओर कैसे चकमें देकर आकर्षित कराता है। आदम और हव्वा के सामने यद्यपि शैतान प्रकट हो गया था, लेकिन दुनिया में उसके वस्वसे की प्रक्रिया छुपे दुश्मन के ह़मले की तरह़ होती है। इसलिए आदमी को उसकी वस्वसा अंदाज़ी का पता नहीं चलता।

अल्बत्ता अपने दिल में वह बुरे ख़याल एवं बुरे विचार महसूस करने लगता है। लेकिन इन विचारों को स्वीकार करना या न करना इन्सान के अपने फ़ैसले पर होता है। यदि वह पूरे होश में और अपने दुश्मन की ओर से चौकन्ना हो तो शैतानी वस्वसों का कोई असर क़ुबूल नहीं करता, अगर ग़ाफ़िल (अचेत) हो तो असर क़ुबूल कर लेता है और इन्सान का दिल उसी सूरत में चौकन्ना रहता है जबकि उस में ख़ुदा की याद बस गई हो। अल्लाह का ज़िक्र इन्सान के बचाव का सबसे बड़ा हथियार है। इस हथियार को इस्तेमाल करके दिल में पैदा होने वाले वस्वसों से जब वह ख़ुदा की पनाह माँगता है, तो वस्सवे बेअसर होकर रह जाते हैं और शैतान को नाकाम लौटना पड़ता है।

ऊपर की आयत में शैतान की उन छुपी कार्यवाहियों से जो वह इन्सान के विरुद्ध करता है, सचेत एवं सावधान किया गया है ताकि इन्सान अपने दुश्मन की तरफ़ से चौकन्ना रहे और अपने बचाव का सामान करे।

इसी तरह़ ईमान लाने वालों को क़ुर्आन के रूप में जो हिदायत दी गई है,

उसके लिए सब से बड़ा ख़त्रा शैतान की वस्वसा अंदाज़ी है, अर्थात वह ऐसी बातें दिल में डाल सकता है जो क़ुर्आनी मामले में सन्देह पैदा करने वाली और हिदायत के मार्ग से दूर करने वाली हों, विशेष रूप से तौह़ीद का अ़क़ीदा जो दीन की बुनियाद और क़ुर्आन की अस्ल रूह़ है। शैतान की शरारती चालें उसके विरुद्ध हो सकती हैं। इसलिए इस दुश्मन की शातिराना चालों से होशियार रहने और अपने दीन व अ़क़ीदे की ह़िफ़ाज़त का सामान करने की ज़रूरत है।

दिलों का वस्वसा

दिलों में वस्वसे डालना उर्दू मुह़ावरे के लिह़ाज़ से है, वरना वास्तव में 'सुदूर' सद्र का बहुवचन है, जिसका अर्थ 'सीना' है। शैतान के वस्वसे अंदाज़ी करने का स्थान इन्सान का अन्दुरून अर्थात उसका सीना है। सीना दिल के लिए ड्योढ़ी (चौखट) की ह़ैसियत रखता है, जहाँ से वस्वसे दिल में दाख़िल होते हैं।

वस्वसे दिल में सीधे दाख़िल नहीं होते बल्कि सीना के ज़रिये दाख़िल होते हैं, गोया शैतान के तीर सीने में दाख़िल हो जाते हैं और उनका ज़हरीला असर दिल पर उसी समय होता है, जबकि दिल अचेतना के खर्राटे ले रहा होता है। वरना अगर दिल अल्लाह के ज़िक्र से मामूर हो तो वह बचाव कर लेता है, और उसके प्रभाव से सुरक्षित रहता है, वस्वसा डालने वालों की दो क़िस्में हैं, जिन्न और इन्सान।

जिन्न शैतान-

पहली क़िस्म शैतानों की वह होती है, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को गुमराह करने की क़ुदरत दी है, हर इन्सान के साथ एक शैतान उस का साथी होता है, जब आप (सल्ल०) ने यह बात फ़रमाई तो सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा या रसूलल्लाहि (सल्ल०)! क्या वह आप के साथ है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया! हाँ मेरे साथ भी हैं, लेकिन अल्लाह ने उस पर मेरी मदद फ़रमाई है, और वह मेरा मुतीअ़ (फ़रमाँबरदार) हो गया है। मुझे वह ख़ैर के अ़लावा किसी बात का हुक्म नहीं देता। **(सह़ी मुस्लिम, किताब सिफ़तुल्क़ियामः)**

इसी तरह़ एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) एतिकाफ़ की ह़ालत में थे कि आप (सल्ल०) की बीवी ह़ज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा आप (सल्ल०) से मिलने के लिए आईं, रात का वक़्त था, आप (सल्ल०) उन्हें छोड़ने के लिए उन के साथ गये। रास्ते में दो अन्सारी सह़ाबी वहाँ से गुज़रे, तो आप (सल्ल०) ने उन्हें बुलाकर फ़रमाया कि यह मेरी बीवी सफ़िया बिन्त ह़ुई हैं, उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाहि (सल्ल०)! आप के विषय में हमें क्या बद्गुमानी हो सकती थी? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह तो ठीक है, लेकिन शैतान इन्सान की रगों में ख़ून की तरह़ दौड़ता है। मुझे ख़त्रा महसूस हुआ कि कहीं वह तुम्हारे दिलों में कुछ शुब्हा (शंका) न डाल दे। **(सह़ी बुख़ारी, किताबुल एह़काम)**

इन्सानी शैतान

दूसरे शैतान इन्सानों में से होते हैं, जो नसीह़त और शफ़क़त के रूप में इन्सानों को गुमराही की तर्ग़ीब देते हैं, कुछ लोग कहते हैं कि शैतान जिन को गुमराह करता है उन की दो क़िस्में हैं, अर्थात शैतान इन्सानों को भी गुमराह करता है और जिन्नातों को भी। जिन्नात भी शैतान के वस्वसे से गुमराह होने वालों में शामिल हैं।

इस तरह़ वस्वसा अंदाज़ी करने वाला शैतान मात्र इब्लीस ही नहीं है, बल्कि जिन्नों और इन्सानों में ऐसे बहुत से शैतान मौजूद होते हैं, जो यह काम करते हैं।

"और इसी तरह़ हमने नबी के लिए इन्सानों और जिन्नों के शैतानों को दुश्मन बना दिया जो एक दूसरे पर चिकनी बातें फ़रेब देने के लिए मन में डालते हैं।" **(अल् अनआ़म आयत नं० ११२)**

जहाँ तक जिन्न शैतानों की वस्वसा अंदाज़ी की बात है उन का छिप कर हमलावर होना तो बिलकुल साफ़ है। रहे इन्सानों के शैतान तो वह भी जब वस्वसा अन्दाज़ी करते हैं तो अपने वास्तविक शैतान होने की ह़ैसियत को छिपा कर ही करते हैं।

वह इन्सान के शुभचिन्तक बन कर प्रकट होते हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि

उन का कोई विचार और उनका कोई सुझाव किसी के लिए उसी समय मानने योग्य हो सकता है जब कि एक नसीह़त करने वाला और शुभचिन्तक की ह़ैसियत से वह सामने आए। अगर वह अपने असली रूप अर्थात उपद्रवी (शर पसन्दों) की ह़ैसियत से सामने आए तो कोई व्यक्ति भी उनकी ओर ध्यान देने के लिए तैयार न होगा।

'शर' (फ़ित्ना) फैलाने के बारे में अस्ल काम जिन्न शैतानों का है, जिन का सरदार इब्लीस है, रहे इन्सानी समूह के शैतान तो वह इन ही के अधीन हैं।

शेख़ अजुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम साह़ब ने अपनी किताब (अल्फ़वायद) की मुश्किलातिल कुर्आन में फ़रमाया है कि इन्सानी शैतान से मुराद, ख़ुद उसके नफ़्स का वस्वसा है, क्योंकि जिस तरह़ शैतान इन्सान के दिल में बुरे कामों की तरफ़ रग़बत डालता है, उसी तरह़ इन्सान का अपना नफ़्स भी बुरे कामों की तरफ़ मायल होता है। इसीलिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ख़ुद अपने नफ़्स के शर से भी पनाह माँगना सिखलाया है। ह़दीस में है-

"अल्लाहुम्मा अऊ़ज़ु बिका मिन शर्रि नफ़्सी व शर्रिशैतानि व शिरकः"

अर्थात ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह माँगता हूँ, अपने नफ़्स के शर से, और शैतान के शर से, और शिर्क से भी।

शैतानी वस्वसे से पनाह माँगने की अहमियत

इब्ने कसीर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः नास में तीन सिफ़तें (गुण) रब, मालिक, इलाह, ज़िक्र करके बताया है कि शैतानी वस्वसे से इन्सान को पनाह माँगना चाहिए, क्योंकि हर इन्सान के साथ एक साथी शैतान लगा हुआ है, जो हर क़दम पर इस कोशिश में लगा रहता है कि इन्सान को तबाह व बर्बाद कर दे, पहले तो वह गुनाह की तर्ग़ीब देता है और तरह़-तरह़ से उसको बहला कर गुनाहों की तरफ़ ले जाता है। यदि इसमें कामियाब न हुआ तो इन्सान जो ताअ़त व अ़िबादत करता है उसको ख़राब करने के लिए दिखावा, नाम व नमूद, घमंड और तकब्बुर के वस्वसे दिल में डालता है। इल्म वालों के दिलों में सही

अ़क़ायद के सम्बन्ध में शंका पैदा करता है और उस के शर से वही बच सकता है, जिस को अल्लाह ही मह़फ़ूज़ रखे।

यहाँ जिस वस्वसे से डराया गया है, उस से मुराद वह ख़याल हैं, जिस को इन्सान अपने अख़्तियार से करे और ग़ैर अख़्तियारी वस्वसा व ख़याल जो दिल में आए और गुज़र जाए उससे कुछ नुक़सान नहीं, उस पर कोई गुनाह भी नहीं है।

इन्सान के दो दुश्मन और उनका इलाज

इब्ने कसीर ने अपनी तफ़्सीर के मुक़दमे में क़ुर्आन करीम की तीन आयतें इस मज़मून में लिखी हैं, जिन में इन्सान के दुश्मन, इन्सान और शैतान दोनों दुश्मनों का ज़िक्र करके इन्सानी दुश्मन का दिफ़ा, अच्छे अख़लाक़, बदला न लेने का जज़्बा और उस के साथ एह़सान का सुलूक करना बतलाया है। उस के मुक़ाबिले में शैतान का दिफ़ा इस्तिआ़ज़ः के पढ़ने को।

इब्ने कसीर ने फ़रमाया कि पूरे क़ुर्आन में यह तीन ही आयतें इस विषय की आई हैं। एक आयत सूरः अअ़राफ़ में है कि-

"ख़ुजिल अफ़्व वअ़मुर बिल् मअ़रूफ़ि व अअ़रिज़ अनिल जाहिलीन"

यह तो इन्सानी दुश्मन के मुक़ाबिले की तद्बीर हुई, जिस का ख़ुलासा माफ़ करके दरगुज़र करना, उस को नेक काम की तल्क़ीन करना और बुराई को नज़र अन्दाज़ करना है।

इसी आयत में आगे फ़रमाया- ***"वइ़म्मा यन्ज़ग़न्नका मिनश्शैतानि नज़्गुन फ़स्तअ़िज़ बिल्लाहि इन्नहु समीअुन अ़लीम।"***

यह तल्क़ीन शैतानी दुश्मन के मुक़ाबिले में बताई गई है, जिस का निचोड़ अल्लाह से पनाह माँगना है।

दूसरी आयत सूरः "क़द अफ़्लहल मूमिनून" में है कि पहले इन्साननुमा दुश्मन के इलाज के सम्बन्ध में फ़रमाया **"इद्फ़अ़ बिल्लती हिया अहसनुस्सय्यिअ़ः"** अर्थात बुराई को भलाई के ज़रिये दिफ़ा करो फिर शैतानी दुश्मन के मुक़ाबिले के लिए फ़रमाया गया-

"वक़ुर्ब्बि अअूज़ुबिका मिन हमज़ातिश्शयातीन व अअूज़ुबिका रब्बि अंय्युह़ज़रून"

"ऐ मेरे रब! मैं आप की पनाह माँगता हूँ, शैतानों की छेड़छाड़ और इससे कि वह मेरे पास आए।"

और तीसरी आयत सूरः ह़ामीम सज्दः की है जिसमें पहले इन्सानी दुश्मन को दिफ़ा के लिए इर्शाद फ़रमाया।

"इद्फ़अ़ बिल्लती हिया अह़सन, फ़इज़ल्लज़ी बैनका व बैनहू अ़दावतुन कअन्नहू वलीयुन ह़मीम।"

अनुवाद-

"तुम बुराई को भलाई के ज़रिये दिफ़ा करो, यदि ऐसा कर लोगे तो देखोगे कि तुम्हारा दुश्मन तुम्हारा मुख़्लिस दोस्त बन जाएगा।" इन सब का निचोड़ "अस्तग़फ़ार" के अ़लावा कुछ नहीं। **(इब्ने कसीर)**

इन तीनों आयतों में इन्सान नुमा दुश्मन का इलाज माफ़ी, दरगुज़र और अच्छे अख़्लाक़ बताए गये हैं, क्योंकि इन्सानी फ़ित्रत यही है कि अच्छे अख़्लाक़ और एह़सान से इन्सान प्रभावित हो जाता है। जो शरीर, इन्सानी योग्यता खो बैठा हो, उसका इलाज दूसरी आयत में जिहाद व क़िताल बतलाया गया है, क्योंकि वह खुले दुश्मन हैं, खुले साज़ व सामान के साथ सामने आते हैं, उनकी क़ुव्वत का मुक़ाबिला ताक़त से ही किया जा सकता है।

सिवाए शैतान मल्अून के कि, वह अपनी फ़ित्रत में बदमाश है, एह़सान और दरगुज़र उस पर कोई अच्छा असर नहीं डालता जिस से वह अपनी शरारत से बाज़ आ जाए, यह दोनों क़िस्म की नर्म व गर्म तद्बीरें केवल इन्सानी दुश्मन के मुक़ाबिले में चलती है, शैतान के मुक़ाबिले में नहीं। इसलिए इस का इलाज केवल अल्लाह तआ़ला की पनाह में आना और अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हो जाना है। जिसे पूरे क़ुर्आन में ज़िक्र किया गया है, और इसी पर क़ुर्आन को मुकम्मल किया गया है।

शैतानी चालें कमज़ोर हैं

ऊपर की बातों से किसी को यह न सोचना चाहिए कि शैतान की ताक़त बड़ी

है, उसका मुक़ाबिला मुश्किल है, इसी ख़याल को ख़त्म करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, ***"इन्न कैदश्शैताना काना ज़ईफ़ा"***, और सूरः नह्ल में जहाँ कुर्आन पढ़ने के वक़्त इस्तिआ़ज़ः का हुक्म दिया गया है, वहीं यह भी फ़रमा दिया कि ईमान वालों और अल्लाह पर भरोसा रखने वालों पर, अर्थात अल्लाह की पनाह लेने वालों पर, शैतान का कोई तसल्लुत नहीं होता, अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

"व इज़ा करातल कुर्आना फ़स्तइज़ बिल्लाहिमिनश्शैतानिर्रजीम....."

"अर्थात जब तू कुर्आन पढ़ने लगे तो पनाह है, अल्लाह की शैतान मरदूद से। उस का ज़ोर नहीं चलता उन पर जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर भरोसा करते हैं, उसका ज़ोर तो उन्हीं पर है, जो उसको दोस्त समझते हैं और जो उस को शरीक मानते हैं।" **(सूरः नह्ल-६८)**

तआ़वीज़ गंडों से परहेज़

इसलिए एक मुसलमान को सब से पहले अपने अ़क़ीदा की हिफ़ाज़त करनी चाहिए और कोई ऐसा अ़मल नहीं करना चाहिए जिस से उसका अ़क़ीदा बिगड़ता हो, लिहाज़ा नाजायज़ दवाएँ इस्तेमाल न करें, नुजूमियों, काहिनों और शोअ़बदह बाज़ के पास हरगिज़ न जाए, इसलिए कि यह लोग आदमी को अच्छा करने के बजाए उसके दिल को और बीमार कर देते हैं और उस के अ़क़ीदे को बिगाड़ देते हैं, लेकिन जो अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करता है वह उस के लिए काफ़ी हो जाता है।

कुछ लोग तअ़वीज़ें अपने गले में डाल लेते हैं जब कि उन्हें जिस्मानी तौर पर कोई मर्ज़ नहीं होता और यह ख़याली व वहमी मरीज़ होते हैं, जैसे नज़रबद, ह़सद से ख़ौफ़ वग़ैरह, कुछ लोग तो अपनी गाड़ी, जानवर, घर के दरवाज़े और दुकानों पर तअ़वीज़ लटकाते हैं। यह सब अ़क़ीदे की कमज़ोरी है, अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल की कमज़ोरी है और अ़क़ीदा व एतिक़ाद में कमज़ोरी पैदा हो जाना ही ह़क़ीक़त में सब से बड़ी बीमारी है जिसका जल्द इलाज होना ज़रूरी है जो तौह़ीद के इ़ल्म ही से हो सकता है।

मुअव्विज़तैन हर तरह़ की दुनियवी और दीनी आफ़तों से ह़िफ़ाज़त का क़िला है

दुनिया व आख़िरत की तमाम आफ़तों से बचने का अस्ल ज़रिया एक ही है कि इन्सान अपने आप को अल्लाह की पनाह में दे दे, और अपने अ़मल से उसकी पनाह में आने के क़ाबिल बनने की कोशिश करे। इन दोनों सूरतों में पहली सूरः 'फ़लक़' में तो दुनियवी आफ़तों से अल्लाह की पनाह मांगने की तअ़लीम दी गई है और सूरः 'नास' में आख़िरत की आफ़तों से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगी गई है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ह़बीब से रिवायत है, "कि एक रात में बारिश और सख़्त अन्धेरा था, हम ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तलाश करने के लिए निकले, जब आप (सल्ल०) को पा लिया तो आपने फ़रमाया कि कहो, मैंने अ़र्ज़ किया कि क्या कहूँ, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "कुल हुवल्लाहु अ़हद" और मुअ़व्विज़तैन पढ़ो, जब सुबह़ हो और जब शाम हो, तीन बार यह पढ़ना तुम्हारे लिए हर तकलीफ़ से अमान होगी।" **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, नसई)**

ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब आप (सल्ल०) को कोई तकलीफ़ होती तो 'मुअ़व्विज़तैन' (कुल अऊ़ज़ू बिरब्बिन्नासि और कुल आअ़ूजु बिरब्बिल्फ़लकि) पढ़ कर अपने जिस्म पर फूँक लेते थे, जब आप (सल्ल०) को तकलीफ़ ज़्यादा हो गई तो मैं यह सूरतें पढ़ कर आप (सल्ल०) के हाथों को बरकत की उम्मीद से, आप (सल्ल०) के जिस्म पर फेरती थी।

(बुख़ारी फ़ज़ाएलुल कुर्आन, बाबुल मुअव्विज़ात, मुस्लिम किताबुस्सलाम बाब रकीयतुलमरीज़ बिल् मुअ़व्विज़ात)

आप (सल्ल०) का यह मामूल भी था कि रात को सोते वक़्त सूरः इख़्लास और मुअ़व्विज़तैन पढ़कर अपनी हथेलियों पर फूँकते और फिर उन्हें पूरे जिस्म पर मलते, पहले सर, चेहरा और जिस्म के अगले ह़िस्से पर हाथ फेरते, उस के बाद जहाँ तक आप (सल्ल०) के हाथ पहुँचते, तीन बार आप (सल्ल०) ऐसा ही करते।) **(सह़ी बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले कुर्आन बाब फ़ज़लुल मुअ़व्विज़ाति)**

एक ह़दीस में है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को नमाज़ में बिच्छू ने डस लिया तो नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आप (सल्ल०) ने पानी और नमक मँगवा कर उसके ऊपर मलते और साथ-साथ "कुलया अइयुहल काफ़िरून, कुल हुवल्लाहु अ़हद और कुल अऊ़ज़ू बिरब्बिन्नासि" पढ़ते रहे। **(मजमऊ़ज़्ज़वाइद)**

तअ़वीज़ गंडा कराना अफ़ज़ल है या न कराना अफ़ज़ल है

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से ७० हज़ार आदमी बग़ैर ह़िसाब किताब के जन्नत में दाख़िल होंगे और यह वह लोग होंगे जो झाड़-फूँक नहीं करते और बद्शगुनी नहीं लेते और अपने परवरदिग़ार पर भरोसा करते हैं। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

मतलब यह है कि जो झाड़-फूँक नहीं करवाते और बद्शगूनी नहीं लेते जैसे छींकने को या किसी जानवर के सामने से निकल जाने को मन्हूस नहीं समझते और नफ़ा नुक़सान का मालिक केवल अल्लाह ही को समझते हैं तो वह जन्नत में पहले दाख़िल होंगे।

इससे मालूम हुआ कि अफ़ज़ल यही है कि तअ़वीज़ गंडों से परहेज़ करते हुए केवल दुआ़ पर ही भरोसा किया जाए इसलिए कि जिस मस्ले में जाएज़ या मना होने में इख़्तिलाफ़ हो उसमें एह़तियात करना ही अफ़ज़ल है।

तअ़वीज़ का ख़ुलासा

पहली- बात तो यह है कि हर तरह़ की तअ़वीज़ से उमूमी तौर पर रोका गया है, और इस उ़मूम को ख़ास करने वाली कोई चीज़ मौजूद नहीं।

दूसरी- इस के ज़रिये फ़ित्ना व फ़साद का रास्ता खुल जाता है, इसलिए कि इस के जवाज़ के बाद लोग वह चीज़ें इस्तेमाल करने लगते हैं जो हमारे यहाँ मुबाह़ नहीं।

तीसरी- जब कुर्आनी आयतों से तैयार की हुई तअ़वीज़ लटकाई जाती है तो

लटकाने वाले से इस की बेहुरमती भी हो जाती है जैसे बैतुल् ख़ला या इस्तिन्जा के वक़्त उसे अपने पास से अलग नहीं कर पाता।

चौथी- इस में कुर्आन मजीद के अ़लावा दूसरी तमाम लटकाने वाली चीज़ें आ जाती हैं, जैसे ठीकरे, हड्डियाँ, सीप, धागे, जूतियाँ, कीलें, शयातीन व जिन्न के नाम आदि। तअ़वीज़ों की यह क़िस्म सरासर ह़राम है, इस में खुला हुआ शिर्क है, इसलिए कि इस तरह़ की चीज़ों में अल्लाह तआ़ला उस के अस्माउस्सिफ़ात और कुर्आनी आयात के बजाए दीगर चीज़ों के नाम भी लटकाए जाते हैं। जब कि एक ह़दीस शरीफ़ में है:-

लटकाई हुई चीज़ के सुपुर्द-

"जो शख़्स किसी चीज़ को लटकाता है वह उसी के सुपुर्द कर दिया जाता है।"

(अह़मद, अबूदाऊद)

यानी अल्लाह तआ़ला उस को उसी चीज़ के सुपुर्द कर देता है और अगर कोई अल्लाह तआ़ला से लौ लगाए रहता है और उस की पनाह चाहता है और अपने मामलात भी उस के सुपुर्द कर देता है, तो ऐसे शख़्स के लिए अल्लाह तआ़ला ख़ुद काफ़ी हो जाता है, और हर मुश्किल को आसान बना देता है, और जो लोग इस के अ़लावा दूसरी मख़्लूक़ात तअ़वीज़ों और मक़ाबिर व मज़ारात का सहारा लेते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हें उन्हीं के सुपर्द कर देते हैं जो उसे नफ़ा नहीं पहुँचा सकते, इस की वजह से उन का अ़क़ीदा ख़राब हो जाता है और अल्लाह से उन के तअ़ल्लुक़ात ख़त्म हो जाते हैं और अल्लाह तआ़ला भी उस का साथ छोड़ देते हैं।

तवक्कुल की क़िस्में

तवक्कुल की दो क़िस्में हैं। इ़ल्म के एतिबार से और अ़मल के एतिबार से।

इ़ल्म के एतिबार से यह है कि हर काम का ह़क़ीक़ी मुदब्बिर अल्लाह को समझे और अपने को हर काम में उनका मोह़ताज होने का अ़क़ीदा रखे यह तवक्कुल तो हर काम में फ़र्ज़ और इस्लामी अ़क़ीदे का ह़िस्सा है।

दूसरी क़िस्म अ़मल के तवक्कुल की है इसकी ह़क़ीक़त अस्बाब को छोड़ देना है फिर अस्बाब की भी दो क़िस्में हैं।

१- दीनी अस्बाब २- दुनियवी अस्बाब

दीनी अस्बाब जिनको अपनाने में कोई दीनी नफ़ा ह़ासिल हो उसको छोड़ देना बेहतर नहीं, बल्कि कभी-कभी गुनाह होता है और शरीअ़त में इसे तवक्कुल नहीं कहते।

और दुनियवी अस्बाब जिससे दुनिया का नफ़ा ह़ासिल हो उस नफ़ा की दो क़िस्में हैं। ह़राम या ह़लाल

अगर ह़राम हो तो उसके अस्बाब को छोड़ना ज़रूरी है और यह तवक्कुल फ़र्ज़ है और अगर ह़लाल हो तो उसकी तीन क़िस्में हैं-

१- वहमी अस्बाब २- यक़ीनी अस्बाब ३- ज़न्नी (गुमान) अस्बाब

वहमी अस्बाब-

जिनको लालची और ह़रीस लोग अख़्तियार करते हैं इसका छोड़ना ज़रूरी है।

यक़ीनी अस्बाब-

जिन पर वह नफ़ा आदत के अनुसार हो जाता हो जैसे- खाने के बाद पेट भर जाना। पानी पीने के बाद प्यास ख़त्म हो जाना इसका छोड़ना जाएज़ नहीं और न यह शरीअ़त के अनुसार तवक्कुल है।

अस्बाब ज़न्नी-

जिन पर अक्सर नफ़ा हो जाता हो, मगर कभी-कभी न भी होता हो। जैसे- इलाज के बाद अच्छी सेहत का हो जाना, या नौकरी और मज़दूरी के बाद रिज़्क़ का मिलना। इन अस्बाब का छोड़ना जिसको अहले तरीक़त की ज़बान में अक्सर तवक्कुल कहते हैं इसके हुक्म में तफ़्सील है वह यह कि कमज़ोर दिल वाले के लिए यह जाएज़ नहीं और कभी दिल व ईमान वाले के लिए जायज़ है बल्कि कभी-कभी मुस्तह़ब भी हो जाता है। **(बवादिरुन्नवादिर पेज नं० २६७)**

ज़ाहिरी अस्बाब अख़्तियार करने की मुख़्तलिफ़ सूरते हैं। तद्बीर के दो दर्जे हैं एक उसका नफ़ा वाला होना, दूसरा जायज़ होना।

नफ़ा वाला होने में तो यह तफ़्सीर है कि अगर वह तक़्दीर के मुताबिक़ होगी तो नफ़ा वाली होगी वरना नहीं और इसके जायज़ होने में यह तफ़्सील है कि इसके दो दर्जे हैं। एक दर्जा तो एतिक़ाद का या यक़ीन का यानी ज़ाहिरी तद्बीर को मुस्तक़िल तासीर वाला समझा जाए तो यह एतिक़ाद शरीअ़त में ह़राम व बातिल है, मगर ग़ैर मुस्तक़िल तासीर का एतिक़ाद रखना यह अहले ह़क़ के लिए यहाँ जायज़ है।

आगे दूसरा मर्तबः अ़मल का है, यानी मक़ासिद के लिए अस्बाब अख़्तियार किये जाएँ तो उसका हुक्म यह है कि उस मक़्सद को देखना चाहिए कि कैसा है तो इसमें तीन चीज़े हैं।

१- या तो वह मक़्सद दीनी होगा या दुनियावी या मअ़सियत (गुनाह का) तो उसके लिए अस्बाब का अख़्तियार करना बिल्कुल नाजायज़ है और अगर वह मक़्सद दुनियावी मुबाह़ है तो देखना चाहिए कि वह दुनियावी मुबाह़ ज़रूरी है या ग़ैर ज़रूरी।

अगर ज़रूरी है तो उसके अस्बाब को देखना चाहिए कि उन पर उस मक़्सद का मुरत्तब होना यानी मक़्सद ह़ासिल होना यक़ीनी है या ग़ैर यक़ीनी। अगर यक़ीनी है तो उसके अस्बाब का अख़्तियार करना भी वाजिब है और अगर ग़ैर यक़ीनी है तो कमज़ोरों के लिए अस्बाब का अख़्तियार करना ज़रूरी है और मज़बूत लोगों के लिए जायज़ है मगर छोड़ देना अफ़ज़ल है।

और अगर वह दुनियवी मुबाह़ ग़ैर ज़रूरी हो और उसके अस्बाब का अख़्तियार करना दीन के लिए नुक़सानद हो तो जायज़ है वरना नाजायज़ है, मगर छोड़ देना अफ़ज़ल है। **(बवादिरुन्नवादिर पेज नं० २६५)**

इस तरह़ किसी तअ़वीज़ पर नाज़ करना या भरोसा करना बेकार है, मगर सही तद्बीर यह है कि अल्लाह को राज़ी रखा जाए और शरई़ हुक्मों पर अ़मल करते हुए फ़रायज़ का पाबन्दी से एह़तिमाम किया जाए, इसलिए कि क़िस्मत व तवक्कुल अस्ल चीज़ है कोई लाख तद्बीर करे मगर जब क़िस्मत में नहीं होता तो कुछ भी नहीं होता।

दुआ़ओं के आदाब और मख़्सूस दुआ़एँ

दुआ़ के आदाब

(१) इख़्लास व तवज्जोह के साथ दुआ़ करना। (२) खाने, पीने, पहनने में ह़राम से बचना। (३) बावुज़ू दुआ़ करना। (४) दुआ़ मांगने से पहले और बाद में अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व सना बयान करना। (५) दुरुदशरीफ़ पढ़ना (६) आजिज़ी व इन्किसारी अख़्तियार करना। (७) गिड़गिड़ा कर माँगना। (८) रग़बत व शौक़ के साथ माँगना। (९) क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करना। (१०) अल्लाह तआ़ला के नामों और सिफ़तों के साथ माँगना। **(इब्ने ह़ब्बान, मुस्तदरक)**

दुआ़ की क़ुबूलियत के औक़ात

१. रमज़ानुल मुबारक का पूरा महीना।
२. अ़रफ़ा (ज़िल ह़िज्ज की नवीं तारीख़) का पूरा दिन।
३. जुमअ़ की रात (यानी जुमेरात और जुमा की दर्मियानी रात।)
४. जुमअ़ का पूरा दिन, ख़ूसूसन अ़स्र के बाद गुरुब तक।
५. सह़र के वक़्त।
६. शबे क़द्र में।
७. नमाज़ पंचगाना के बाद।

जिन लोगों की दुआ़एँ जल्द क़ुबूल होती हैं

१. मजबूर व लाचार की। **(बुख़ारी मुस्लिम)**
२. बाप की दुआ़ अपनी औलाद के लिए। **(अबूदाऊद)**
३. मुसाफ़िर की दुआ़। **(अबूदाऊद)**
४. माँ-बाप की ख़िदमत करने वाली औलाद की दुआ़। **(मुस्लिम)**
५. एक मुसलमान की दुआ़ दूसरे मुसलमान के लिए। **(अबूदाऊद)**
६. मज़लूम की दुआ़। **(सह़ाह सित्ता)**

रात के वक़्त पढ़ने की दुआएँ

(१) सोते वक़्त "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" तीन-तीन मर्तबा पढ़ कर हाथ पर दम करके पूरे जिस्म पर फेरे। **(बुख़ारी मुस्लिम)**

नोट-

हुज़ूर-ए-अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया जो शख़्स तीन-तीन मर्तबा सोते वक़्त पढ़ ले तो उस के गुनाह ख़्वाह समन्दर के बराबर हों, या दरख़्तों के पत्ते के बराबर हो या रेगिस्तान के रेत के बराबर हो, या दुनिया में दिनों की तादाद के बराबर हों अल्लाह तआ़ला माफ़ कर देता है। **(तिर्मिज़ी)**

सोकर उठने की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम को ज़िन्दा किया मौत देने के बाद और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

बैतुलख़ला में दाख़िल होने से पहले और बाद की दुआ़

जब बैतुलख़ला में जाएँ तो दाख़िल होने से पहले (और अगर मैदान में हैं तो बैठने से पहले) "بِسْمِ اللّٰهِ" कहे और उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ख़बीस जिन्नों से मर्द हो या औ़रत

(इब्ने अबी शैबा, व तिर्मिज़ी)

जब फ़ारिग़ होकर निकलें तो पढ़ें

غُفْرَانَكَ .

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से मग़्फ़िरत का तलबगार हूँ। **(इब्ने, ह़ब्बान, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِی

तमाम तअ़रीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मेरी तकलीफ़ दूर की और मुझे आ़फ़ियत बख़्शी। **(रवाहुल निसाई)**

घर में दाख़िल होने और निकलने की दुआ़

जब घर में दाख़िल हों तो यह दुआ़ पढ़ें, और सलाम करें, ख़्वाह घर में कोई हो या न हो) ह़ज़रत साअ़दी (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मोह़ताजी और तंगी की शिकायत की, आप (सल्ल०) ने उस से फ़रमाया कि जब तू घर में दाख़िल हो तो सलाम करो ख़्वाह उस में कोई शख़्स हो या न हो, फिर सलाम भेजो और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ एक बार पढ़ो, उस शख़्स ने ऐसा ही किया, अल्लाह तआ़ला ने (इस अ़मल की बरकत से) इस कसरत से उस को रिज़्क़ दिया कि उस ने दूसरों को नफ़ा पहुँचाया।

(नज़लुल अबरार)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَی اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से घर के अन्दर आने और बाहर जाने की ख़ैर व बरकत का सवाल करता हूँ, हम अल्लाह के नाम के साथ ही घर से जाते हैं और अपने परवरदिगार अल्लाह पर ही हमारा भरोसा है। **(अबूदाऊद)**

घर से निकलें तो यह दुआ पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह तआ़ला पर भरोसा किया, गुनाहों से बचना और नेकियों की कुव्वत देना अल्लाह ही की तरफ़ से है। (तिर्मिज़ी)

उस के बाद आसमान की तरफ़ सर उठाकर यह भी दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَیَّ

ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि गुमराह हो जाऊँ या गुमराह कर दिया जाऊँ, या ज़ुल्म कर दूँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए, या जिहालत करुँ या मुझ पर जिहालत की जाए। (अबूदाऊद)

खाना खाने बैठें तो यह दुआ पढ़ें

जब खाने के लिए बैठें तो हाथ धोकर बैठें, उस के बाद यह दुआ पढ़ें-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ

मैंने अल्लाह के नाम और अल्लाह की बरकत पर खाना शुरु किया। (मुस्तदरक)

अगर शुरु में दुआ भूल गया हो तो यह पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

मैंने उस के अव्वल व आख़िर में अल्लाह का नाम लिया। (मिश्कात)

जब खाना खा चुकें तो यह दुआ पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ۔

तमाम तआ़रीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम को खिलाया और पिलाया और हमको मुसलमानों में से बनाया। (तिर्मिज़ी)

जब दस्तरख़्वान उठाया जाने लगे तो यह दुआ पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مُكَفِّیٍ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا۔

सब तआ़रीफ़ अल्लाह के लिए है ऐसी तआ़रीफ़ जो बहुत हो और पाकीज़ा हो और बरकत, ऐ हमारे रब हम इस खाने को काफ़ी समझ कर या बिल्कुल रुख़्सत करके या उस से बेनियाज़ होकर नहीं उठा रहे हैं। (बुख़ारी)

उस के बाद यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَّنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

ऐ अल्लाह जिस ने मुझे खिलाया तू उसे खिला, और जिस ने मुझे पिलाया तू उसे मिला। (मुस्लिम)

जब मेज़बान से रुख़्सत होने लगे तो यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ

ऐ अल्लाह! उन के रिज़्क़ में बरकत दे और उन को बख़्श दे, और उन पर रहम फ़रमा। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)

पानी पीते वक़्त यह दुआ पढ़ें

जब पानी पीने का इरादा हो तो ऊँट की तरह एक ही सांस में न पिये, बल्कि तीन सांस बर्तन से बाहर ले, फूंक फूंक कर पियें, यानी बर्तन में फूंक न मारे और जब पीने लगे तों "बिस्मिल्लाह" पढ़ें, और जब पी चुके तो "अल्हम्दु लिल्लाह" कहें। (मिश्कात)

ज़मज़म पीने के आदाब

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّشِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नफ़ा पहुँचाने वाले इल्म, और फ़राख़ रोज़ी, और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूँ।

इफ़्तार के वक़्त की दुआ

जब रोज़ा इफ़्तार करने लगें तो यह दुआ पढ़ें-

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ

ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए रोज़ः रखा और तेरी दी हुई रोज़ी से इफ़्तार किया।

(अबूदाऊद)

उस के बाद यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ اَنْ تَغْفِرَلِیْ ذُنُوْبِیْ۔

(ابن ماجه والی حاکم فی المستدرك)

ऐ अल्लाह! मैं तेरी उस रहमत के वास्ते से सवाल करता हूँ जो हर चीज़ को घेरे हुए है कि तू मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दे।

(इब्ने माजा, मुस्तदरक)

इफ़्तार के बाद यह दुआ पढ़ें

ذَهَبَ الظَّمَا وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْاَجْرُ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تَعَالٰى

प्यास चली गई और रगें तर हो गईं और इन्शाअल्लाह सवाब साबित हो गया।

(अबूदाऊद, मुस्तदरक)

जब किसी के यहाँ इफ़्तार करें तो यह दुआ पढ़ें

اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّآئِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰئِكَةُ

तुम्हारे पास रोज़ेदार इफ़्तार करें, और नेक बन्दे तुम्हारा खाना खाएँ और फ़रिश्ते तुम पर रहमत भेजें। (इब्ने माजा)

जब सफ़र पर निकलें तो यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِيْرُ

ऐ अल्लाह! मैं तेरी मदद से (दुश्मनों पर) हमला करता हूँ और तेरी ही मदद से उन के दिफ़ा करने की तदबीर करता और तेरी ही मदद से चलता हूँ। (अहमद)

जब सवार होने लगें और रिकाब या पायदान पर क़दम रखें तो "बिस्मिल्लाह" कहें, और जब जानवर की पुश्त या सीट पर बैठ जाएँ तो "अल्हम्दु लिल्लाह" कहें।"

उस के बाद यह आयत पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

अल्लाह पाक जिस ने उस को हमारे क़ब्ज़े में दे दिया और हम उस की क़ुदरत के बग़ैर उसे क़ब्ज़ा करने में वाले न थे और बिलाशुबहा हम को अपने रब की तरफ़ जाना है।

(सूरः ज़ुख़्रुफ़, पारा २५)

उस के बाद

तीन बार اَلْحَمْدُ لِلّٰه और तीन बार اَللّٰهُ اَكْبَر और एक बार لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहें।

फिर उस के बाद यह दुआ पढ़ें

سُبْحَانَكَ اِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْلِي فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ ऐ ख़ुदा! तू पाक है बेशक मैंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया तू मुझे बख़्श दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही गुनाह बख़्शता है।

(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

उस के बाद यह दुआ माँगे

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ ऐ अल्लाह! हम तुझ से अपने सफ़र में नेकी की और परहेज़गारी की और जो अ़मल तुझे पसंद हों उस की दरख़्वास्त करते हैं, ऐ अल्लाह! तू हमारा सफ़र आसान कर दे, और उस की मुसाफ़त को तय कर दे, ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र में हमारा रफ़ीक़ और घर बाहर में (हमारा) क़ायम मक़ाम है,(तू हमारे घर बार की हिफ़ाज़त फ़रमा) ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सफ़र की सख़्तियों से और तकलीफ़देह मन्ज़र से, और बीवी बच्चों और माल व औलाद में तकलीफ़देह वापसी से पनाह माँगता हूँ।

सफ़र से वापस होकर जब अपनी बस्ती में पहुँचे तो यह दुआ पढ़ें

اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ हम लौटने वाले हैं, तौबः करने वाले हैं, अल्लाह की बन्दग़ी करने वाले, अपने रब की ह़म्द करने वाले हैं। (मुस्लिम)

फिर जब घर में दाख़िल हों तो यह दुआ पढ़ें

اَوْبًا اَوْبًا لِرَبِّنَا تَوْبًا لَا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا۔ (بزار، ابو یعلی)

मैं वापस आता हूँ, मैं वापस आता हूँ, अपने रब के सामने ऐसी तौबा करता हूँ जो हम पर कोई गुनाह न छोड़े। (बज़ार, अबूयअ़ला)

दरयाई या बह़री सफ़र पर रवाना हो तो यह दुआ पढ़ें

(١) بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔ (هود)

(٢) وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ۔

(१) अल्लाह के नाम से ही उस का लंगर उठाना है (और उस के नाम से) उस का लंगर डालना है। (२) और (उन काफ़िरों, मुशिरकों ने) अल्लाह की क़द्र करने का जैसा ह़क़ था वैसी क़द्र नहीं की ह़ालांकि क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आसमान उस के दायें हाथ में लिपटे हुए होंगे (ह़क़ीक़त में अल्लाह पाक व साफ़ और बुलन्द व बरतर है उन मुश्रिकों के शिर्क है। (तबरानी, अबूयअ़ला)

किसी को रुख़सत करते वक़्त यह दुआ पढ़ें

जब कोई सफ़र पर जा रहा हो तो रुख़्सत करने वाला "मुक़ीम" इस से मुसाफ़ा करे और यह दुआ दे।

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَأَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ

मैं अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ तुम्हारे दीन को, अमानत और और तुम्हारे अ़मल को ख़ातिमों (सफ़र) के अन्जाम को (वही सब का मुहाफ़िज़ है।) (निसाई, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

रुख़सत होने वाला मुसाफ़िर यह दुआ दे

أَسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ الَّذِيْ لَا تَخِيْبُ وَدَائِعُهُ

मैं भी तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ जिस के सुपुर्द की हुई अमानतें नामुराद नहीं होतीं। (तबरानी)

मरीज़ की अ़यादत के वक़्त की दुआ

لَا بَاسَ عَلَيْكَ طَهُوْرٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

तुझ पर कोई ह़र्ज नहीं है (यह बीमारी गुनाहों से) पाक करने वाली है, अगर अल्लाह ने चाहा। (रवाहुल बुख़ारी, व नसई)

शिफ़ा-ए-मरीज़ की दुआ

أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

बीमारी को दूर कर ऐ तमाम लोगों के परवरदिगार, और शिफ़ा दे तू ही शिफ़ा देने वाला है, शिफ़ा नहीं है मगर तेरी शिफ़ा, ऐसी शिफ़ा दे जो किसी बीमारी को बाक़ी न छोड़े। (बुख़ारी व मुस्लिम)

जाँकनी के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ

ऐ अल्लाह! मौत की सख़्तियों के इस मौक़े में मेरी मदद फ़रमा।

रुह़ निकलने के बाद की दुआ

रुह़ निकलने के बाद मय्यित की आँखें बन्द करते हुए यह दुआ पढ़ें, और "लिफ़ुलान" की जगह मय्यित का नाम लें।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِيْ الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِيْ عَقِبِهٖ فِي الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْلَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ

ऐ अल्लाह! इस को बख़्श दे और हिदायत याफ़्ता बन्दों में शामिल फ़रमा कर इस का दर्जा बुलन्द फ़रमा, और इस के पसमान्दगान में तू इस का जानशीन हो जा, और रब्बुल आ़लमीन हमें और इसे बख़्श दे और इस की क़ब्र को कुशादह और मुनव्वर फ़रमा। (मिश्कात, मुस्लिम)

मय्यित को क़ब्र में रखने की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

अल्लाह के नाम से और अल्लाह की मदद के साथ, और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मज़हब पर (क़ब्र में) रखता हूँ।

कुर्बानी की दुआ

कुर्बानी के जानवर को क़िब्ला रुख़ लिटा कर यह दुआ पढ़ें-

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَالسَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَا

اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ۔ اِنَّ صَلٰوتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰالِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ'

ज़ब्ह़ करने के बाद यह दुआ पढ़े-

''اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِیْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِیْلِكَ اِبْرَاهِیْمَ عَلَیْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ''۔

अगर दूसरे की कुर्बानी ज़ब्ह़ करना हो तो मिन्नी की जगह **من فلان** यानी उस का नाम ले और अपनी क़र्बानी में दूसरे लोग शरीक हो तो **منی ومن فلان وفلان** कहे।

अक़ीक़ा की दुआ

जानवर ज़ब्ह़ करने से पहले **اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ** आख़िर तक कुर्बानी वाली दुआ पढ़ कर, और ज़ब्ह़ करने के बाद या दुआ पढ़े-

''اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِیْقَةُ ابْنِیْ تَقَبَّلْهُ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِیْبِكَ مُحَمَّدٍ وَخَلِیْلِكَ اِبْرَاهِیْمَ عَلَیْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ دَمُهَا بِدَمِهٖ لَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ، شَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ، عَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ۔

नोट- अगर बच्चा हो तो बिदमिही अगर बच्ची हो तो बिदमिही की जगह बिदमिहा कहेंगे, और "इब्ने" की जगह "बिन्त" कहेंगे, अगर ज़ब्ह़ करने वाला बाप के अ़लावा कोई दूसरा हो तो लड़के या लड़की के बाप का भी नाम ले।

क़ुनूते नाज़िला

किसी आ़म मुसीबत मस्लन क़ह़त, वबा और दुश्मनों के ह़मले वग़ैरह का अन्देशा हो या आ़म ख़ौफ़ व हिरास का आ़लम हो तो ऐसे वक़्त में यह दुआ

(क़ुनूते नाज़िला) फ़ज्र की नमाज़ की आख़िरी रकअ़त में दूसरे रुकूअ़ के बाद पढ़ी जाएगी, अगर इमाम पढ़े तो मुक़्तदी इमाम के ठहरने के वक़्त आहिस्ता से आमीन कहे।

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْ مَنْ هَدَیْتَ وَعَافِنِیْ فِیْ مَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْ مَنْ تَوَلَّیْتَ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ مَا اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّ مَا قَضَیْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْكَ اِنَّهٗ لَا یَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ وَلَا یَعِزُّ مَنْ عَادَیْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَیْكَ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلَی النَّبِیِّ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاَلِّفْ بَیْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَیْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰی عَدُوِّكَ وَعَدُوِّهِمْ۔ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْكَفَرَةَ الَّذِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِكَ وَیُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَیُقَاتِلُوْنَ اَوْلِیَائَكَ۔ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَیْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ

ऐ अल्लाह! तू हमें राह दिखा उन लोगों की जिन को तूने राह दिखाई, और हमें आ़फ़ियत दे उन लोगों की तरह जिन को तूने आ़फ़ियत बख़्शी, और दोस्त रख हम को उन लोगों में जिन को तूने दोस्त रखा, और हमें अ़ता कर वह अपनी नेअ़मत बरकत अ़ता फ़रमा, और इस शर से हमें बचा जिस का तूने फ़ैसला कर लिया है बेशक तू हुक्म देता है और तुझ को हुक्म नहीं दिया जाता है और बेशक तू जिस को दोस्त रखे वह रुस्वा नहीं होता और नहीं इ़ज़्ज़त पाता है जिस से तू दुश्मनी रखे, ऐ हमारे परवरदिगार! तू बरकत वाला है, तू बुलन्द मर्तबा है, हम तुझ से इस्तिगफ़ार करते हैं और तुझ से तौबः करते हैं, और अल्लाह की रह़मत हो अल्लाह तआ़ला के नबी करीम (सल्ल०) पर। **(तिर्मिज़ी व नसई)**

ऐ अल्लाह! हम को और तमाम मोमिन मर्द, औ़रतों की मग़्फ़िरत फ़रमा, और उन के दिलों में एक दूसरे की मुह़ब्बत दे और इस्लाह़ कर उन के दर्मियान और उन की मदद कर, उन के और अपने दुश्मन पर, लानत भेज काफ़िरों पर जो तेरे रास्ते से रोकते हैं, और तेरे नबियों को झुठलाते हैं और तेरे दोस्तों से लड़ते हैं, ऐ अल्लाह उन की बातों में इख़्तिलाफ़ पैदा कर दे,

وَاَنْزِلْ بِهِمْ بَاْسَكَ الَّذِیْ لَا تَرُدُّهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِیْنَ وَاجْعَلْ عَلَیْهِمْ رِجْزَكَ وَعَذَابَكَ اِلٰهَ الْحَقِّ آمِیْنَ۔ اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ وَمُجْرِیَ السَّحَابِ وَهَازِمَ الْاَحْزَابِ اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَیْهِمْ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ۔

और उन की क़दमों को डगमगा दे, और उन की जमीअ़त को पारह-पारह कर दे, और उन के इलाक़े को नेस्तानाबूद कर दे और नाज़िल फ़रमा उन पर ऐसा अ़ज़ाब जो न पलटे नाफ़रमान क़ौम से और उन पर अपनी सख़्ती और अ़ज़ाब मुसल्लत फ़रमा दे, ऐ मअ़बूद बरह़क़ (क़ुबूल फ़रमाना) ऐ अल्लाह किताब के नाज़िल करने वाले और बादलों के चलाने वाले और लश्करों के हराने वाले, उन को शिकस्त दे और हमारी उन पर मदद फ़रमा, ऐ अल्लाह हम तुझ को उन के सामने करते हैं और उन के शर से तेरी पनाह मांगते हैं।

दुआ़-ए- इस्तिख़ारा

अगर किसी बात में तरद्दुद हो, या ख़ैर की तलब हो तो दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ कर यह दुआ़ पढ़े, और "اِنَّ هٰذَ الْاَمْرَ" की जगह अपनी ज़रुरत का नाम ले।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ۔ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعِیْشَتِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरे इ़ल्म के ज़रिये ख़ैर चाहता हूँ, और तेरी क़ुदरत के ज़रिए से क़ुदरत, और तुझ से सवाल करता हूँ तेरी बड़ी मेहरबानी से इसलिए कि तू क़ुदरत रखता है और मुझे क़ुदरत नहीं, और तू जानता है मैं नहीं जानता, ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम (काम का नाम लेकर) मेरे ह़क़ में मेरे दीन व

(اَوْ) عَاجِلِ اَمْرِیْ وَآجِلِهٖ فَاقْدُرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعِیْشَتِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ (اَوْ) عَاجِلِ اَمْرِیْ وَآجِلِهٖ فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ۔

दुनिया और मेरे अन्जाम (या) देर सवेर के लिह़ाज़ से बेहतर है तू उस को मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा दे और मेरे लिए आसान कर दे फिर मुबारक फ़रमा, और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे लिए दीन व दुनिया का अन्जाम (या) देर सवेर के लिए अच्छा नहीं तो तू उस को मुझ से फेर दे और मुझे उस से बाज़ रख, मेरे लिए बेहतरी मुक़द्दर जहाँ हो, फिर मुझे उस पर राज़ी कर दे।